मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

● वर्ष : 10 ● अंक : 07 ● जुलाई : 2025 ● पृष्ठ : 40 ● मूल्य : 50/-

■ इज़राइल-ईरान युद्ध : असली विजेता कौन ■ जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर गम्भीर चुनौती ■ सैनिक की धार्मिक आस्था सैन्य नियमों का उल्लंघन नहीं

: हम क्यों :

मीडिया मैप एक वैचारिक पत्रिका है। हमारे समाज के नीतिपरक और मूल्यनिष्ठ बिन्दु तथा इनसे जुड़ाव रखने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दे इसकी विषयवस्तु है। मीडिया मैप की संपादकीय नीति उदारवादी, आधुनिक, प्रगतिशील व सर्व धर्म समभाव की भावना पर आधारित है।

मीडिया मैप हमारे बहुलतावादी समाज की विविधताओं से सृजित समस्त सोच, विचार, दृष्टिकोण, मूल्य और मान्यताओं को अपने में समाहित करने का एक प्रयास है। हमारा उद्देश्य वैज्ञानिक सोच द्वारा समाज से जुड़े मूल मुद्दों पर एक प्रबुद्ध जनमत विकसित करना है, जिससे देश में संकुचित मानसिकता और आपसी टकराव से ऊपर उठकर एक उच्चस्तरीय विचार-विमर्श का वातावरण तैयार हो सके।

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

संपादकीय सलाहकार मंडल
डॉ. बलदेवराज गुप्त
के.बी. माथुर
डॉ. जॉन दयाल
डॉ. सलीम खान

प्रधान संपादक
प्रो. प्रदीप माथुर

संयुक्त संपादक : डॉ. सतीश मिश्रा
सहयोगी संपादक : प्रो. शिवाजी सरकार
सहायक संपादक : सुदामा पाल

विशेष प्रतिनिधि : डॉ. मुजफ्फर गजाली
मुख्य उप संपादक : जितेन्द्र मिश्र

प्रबंध संपादक : चन्द्र कुमार
प्रबंधक : जगदीश गौतम
विधि परामर्शदाता : संजय माथुर

पंजीकृत कार्यालय : 2324, सेक्टर-डी पॉकेट-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय : 70 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : 9810385757/9910069262
एम बी के एम फाउंडेशन प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक प्रदीप माथुर द्वारा लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली से मुद्रित एवं मकान नंबर 70, ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम, जनपद-गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश- 201014 से प्रकाशित।

सभी लेखों में लेखकों के अपने उल्लेखित विचार हैं। लेखों और विचारों को लेकर किसी तरह का विवाद होने पर पत्रिका के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक इसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जिला और न्यायालय गाजियाबाद ही होगा। इस पत्रिका से जुड़े सभी पदाधिकारी, सहयोगी और लेखक अवैतनिक हैं। पीआरबी एक्ट के तहत संपादक प्रो. प्रदीप माथुर उत्तरदायी हैं।

RNI No. : UPHIN/2016/68336

अनुक्रमणिका

4 संपादकीय : इज़राइल-ईरान युद्ध : असली विजेता कौन?

जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर गम्भीर चुनौती : प्रो. प्रदीप माथुर 5

6-7 सैनिक की धार्मिक आस्था सैन्य नियमों का उल्लंघन नहीं : सैय्यद खालिक अहमद

1975 का आपातकाल : जब 'आंधी' पर लगा था प्रतिबंध : अमिताभ श्रीवास्तव 8-9

10-11 औरंगजेब के मकबरे पर आरएसएस के दो टूक : अमिताभ श्रीवास्तव

कृषि उपज में रिकॉर्ड वृद्धि निर्यात की अपार संभावनाएं : प्रो. शिवाजी सरकार 12-13

14-16 भोजन और आस्था की स्वतंत्रता मांसाहार पर राजनीति : सलमान अहमद

एशिया में दोगुनी गति से बढ़ते तापमान की स्थिति भयावह : प्रशांत गौतम 17

18-19 निर्धन भारत में बढ़ती अमीरों की संख्या : शेख सलीम

आईएसओ प्रमाणन : गरीब उपभोक्ताओं के साथ धोखा : अनिल जौहरी 20

21 पुराना बनाम नया : कांग्रेस के नेताओं की दुविधाएं : डॉ. सतीश मिश्रा

आखिर क्यों बढ़ रही हैं विमान दुर्घटनाएं : प्रभजोत सिंह 22-23

24-25 गोदी मीडिया का वाशिंगटन पोस्ट ने किया 'पोस्टमार्टम'

बढ़ते अपराध से मुकाबला : अंतरधार्मिक संवाद व जागरूकता जरूरी : सैयद खलीक अहमद 26

28-30 मोदी सरकार की बैलेंसिंग एक्ट महज दिखावा : सतीश मिश्रा

ग़ाज़ा पट्टी की मदद को तैयार दुनिया 31

32-33 भारत-पाक शांतिपूर्ण संबंधों की पहल कैसे हो : सैयद खलीक अहमद

तीर्थयात्रा और जनता की परेशानी 34-35

37 अश्लीलता बर्दाश्त नहीं : 24 ओटीटी प्लेटफार्म पर लगा बैन

Email : editor@mediamap.co.in

संपादकीय

प्रो. प्रदीप माथुर

♦♦

दुनियाभर में दक्षिणपंथी, जनतावादी शक्तियां लोकतंत्र को कमजोर कर रही हैं और अधिनायकवाद को बढ़ावा दे रही हैं। भारत में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा ने 2014 के बाद लोकतांत्रिक संस्थानों को निशाना बनाया गया है–चाहे वह प्रेस हो, न्यायपालिका, या विश्वविद्यालय। यह प्रवृत्ति हमें 20वीं सदी की शुरुआत की याद दिलाती है, जब हिटलर, मुसोलिनी और स्टालिन जैसे तानाशाहों ने सत्ता में आकर दुनिया को विनाश के गर्त में धकेल दिया था। अगर समाज ने सजगता नहीं दिखाई, तो इतिहास खुद को दोहरा सकता है। इज़राइल-ईरान युद्ध सैन्य दृष्टिकोण से भले ही निर्णायक न रहा हो, लेकिन इसका असली असर वैश्विक सत्ता संतुलन पर पड़ा है। यह युद्ध अधिनायकवादी शक्तियों को मजबूत कर रहा है और दुनिया को एक खतरनाक दिशा में ले जा रहा है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या हम इस फासीवादी रुझान के खिलाफ खड़े होने को तैयार हैं?

♦♦

इज़राइल-ईरान युद्ध : असली विजेता कौन?

12 दिवसीय इज़राइल–ईरान युद्ध की पड़ताल करते हुए यह सवाल उठाते हैं कि इस संघर्ष का असली विजेता कौन है। जहां एक ओर इज़राइल दावा करता है कि उसने अपने उद्देश्य हासिल कर लिए, वहीं ईरान कहता है कि उसने इज़राइल को पीछे हटने पर मजबूर किया। लेकिन यह युद्ध दरअसल किसी की जीत नहीं बल्कि दोनों देशों के लिए भारी नुकसान लेकर आया। हालांकि, पश्चिमी समर्थन और यहूदी धनबल के कारण इज़राइल जल्दी उबर सकता है, जबकि ईरान को इस प्रक्रिया में अधिक समय और संघर्ष का सामना करना पड़ेगा।

इस युद्ध के पारंपरिक परिप्रेक्ष्य से आगे बढ़ते हुए इसे एक बड़े भू–राजनीतिक खेल के रूप में देखते हैं। इस संघर्ष का असली लाभार्थी अमेरिका नहीं, बल्कि डोनाल्ड ट्रंप हैं। ट्रंप ने अपने देश और अंतरराष्ट्रीय आलोचना की परवाह किए बिना ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षाओं को खतरे के रूप में पेश किया, इज़राइल को आक्रामक रुख अपनाने के लिए प्रेरित किया, ईरान के साथ चल रही परमाणु वार्ता को विफल किया, और अंततः ईरान पर बमबारी की।

ट्रंप ने यह सब अपने खुफिया सलाहकारों, जैसे तुलसी गैबार्ड की सलाह को नजरअंदाज करते हुए किया। युद्ध के बाद उन्होंने शांति स्थापित करने की पहल कर यह दावा किया कि उनके उद्देश्य पूरे हो गए। लेकिन यह उद्देश्य केवल ईरान की परमाणु क्षमता को नष्ट करना नहीं था, बल्कि उस मुस्लिम देश को मानसिक और राजनीतिक रूप से झुकाना था जो लगातार अमेरिका और पश्चिमी जगत का विरोध करता रहा है।

अमेरिका ने अतीत में मिस्र, लीबिया, इराक और सीरिया जैसे देशों के साथ भी ऐसा ही किया है। ईरान इन सबके बाद बचा हुआ एकमात्र शक्तिशाली विरोधी देश था। अब यदि अमेरिका और ईरान बातचीत की मेज पर बैठते हैं या अमेरिका ईरान के पुनर्निर्माण में मदद करता है, तो यह इसी रणनीति का हिस्सा होगा—ईरान को वैश्विक विरोध का केंद्र बनने से रोकना।

व्यापक सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की ओर बढ़ता है ट्रंप जैसे नेता केवल अमेरिका तक सीमित नहीं हैं। दुनियाभर में दक्षिणपंथी, जनतावादी शक्तियां लोकतंत्र को कमजोर कर रही हैं और अधिनायकवाद को बढ़ावा दे रही हैं। भारत में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा ने 2014 के बाद लोकतांत्रिक संस्थानों को निशाना बनाया गया है—चाहे वह प्रेस हो, न्यायपालिका, या विश्वविद्यालय।

यह प्रवृत्ति हमें 20वीं सदी की शुरुआत की याद दिलाती है जब हिटलर, मुसोलिनी और स्टालिन जैसे तानाशाहों ने सत्ता में आकर दुनिया को विनाश के गर्त में धकेल दिया था। अगर समाज ने सजगता नहीं दिखाई, तो इतिहास खुद को दोहरा सकता है।

इज़राइल–ईरान युद्ध सैन्य दृष्टिकोण से भले ही निर्णायक न रहा हो, लेकिन इसका असली असर वैश्विक सत्ता संतुलन पर पड़ा है। यह युद्ध अधिनायकवादी शक्तियों को मजबूत कर रहा है, और दुनिया को एक खतरनाक दिशा में ले जा रहा है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या हम इस फासीवादी रुझान के खिलाफ खड़े होने को तैयार हैं?

■■■■

जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर गम्भीर चुनौती

प्रो. प्रदीप माथुर

प्रदूषण से जनित चिंता और उसको दूर करने के उपायों पर विचार विमर्श का अवसर प्रदान करता है। अंधा अनुयोजित औद्योगिक विकास उसे उसके कारण होने वाले प्रदूषण से उपजा जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर एक गम्भीर चुनौती के रूप में हमारे सामने है। पिछले दिनों की रिपोर्टों के अनुसार जलवायु परिवर्तन से होने वाली तापमान वृद्धि का सबसे अधिक प्रभाव एशिया पर पड़ रहा है। ये सच है कि हमें प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा के साथ साथ हमारे देश के लिए एक और भी चुनौती है और वह देश के सामाजिक पर्यावरण के बारे म है।

आज भारतीय समाज एक बड़े सामाजिक विघटन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। पुरानी परम्पराएं मान्यताएँ, रीति-रिवाज और नैतिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं, उनकी जगह नए मूल्य अभी समाज में स्थापित नहीं हो पाए हैं। लगता है हमारे समाज में हर स्तर पर अराजकता और असुरक्षा का माहौल बनता जा रहा है। आर्थिक प्रगति और तकनीकी विकास अवश्य हो रहा है पर सामाजिक रिश्तों की नींव मिल रही है। संयुक्त परिवार ही नहीं, एकल परिवार भी टूट रहे हैं।

यह बड़ी चिंता का विषय है कि अपराध का लाभ तेजी से बढ़ रहा है। महिलाओं और दलित वर्ग पर हिंसा, दहेज उत्पीड़न और घरेलू हिंसा तथा बलात्कार की घटनाएं समाज को झकझोर रही हैं। शर्म की बात यह है कि अबोध बच्चियां तक बलात्कार का शिकार हो रही हैं। छोटी छोटी बातों पर सड़क पर झगड़े और हत्या की घटनाएं आम हो चुकी हैं। पड़ोस में जहाँ कभी सहयोग और स्नेह का वातावरण होता था, अब अक्सर कलह और टकराव देखने को मिलते हैं।

सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि जहाँ एक ओर धार्मिक आस्था चरम सीमा पर है, मंदिरों में भीड़, तीर्थस्थलों पर लंबी लाइनें, कीर्तन,

भजन की ध्वनि और नए नए मंदिरों का निर्माण हो रहा है, वहीं दूसरी ओर हम नैतिक पतन की ओर बढ़ते जा रहे हैं। प्रश्न यह है कि क्या धर्म की और बढ़ती है यह रुझान समाज को बेहतर बना पा रही है अथवा नहीं? क्या हमने धर्म को केवल एक बाह्य प्रदर्शन की वस्तु बना दिया है, जिसका जीवन की आंतरिक नैतिकता से कोई संबंध नहीं रहा है.

नैतिक मूल्यों का रहस्य और सांस्कृतिक पतन व सामाजिक वितरण की इस प्रक्रिया को केवल कानून से नहीं रोका जा सकता। आवश्यकता है सामाजिक पुनर्जागरण की। महात्मा गाँधी ने अपने व्यवहार, सादगी और आत्मीयता से समाज के निचले वर्गों को जोड़कर देश को एक नई राह दिखाई थी। आज हमारे बड़े नेताओं, नीत निर्माताओं और प्रभावशाली वर्ग को भी ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। जब तक समाज के सभी वर्गों में नैतिक मूल्यों की पुन: स्थापना नहीं होगी, तब तक विश्व पटल पर एक बड़े देश के रूप में भारत की पहचान बनना संभव नहीं होगा। समाज को दिशा देने के लिए अब केवल उद्देश्य नहीं विजय प्रेरक आचरण की आवश्यकता है ताकि हर व्यक्ति खुद को इस सामाजिक सुधार आंदोलन का हिस्सा समझे। यही एक मात्र रास्ता है जिससे हम सामाजिक विघटन की प्रक्रिया को रोक सकते हैं और एक सशक्त, सुरक्षित और नैतिक भारत का निर्माण करने की दिशा में बढ़ सकते हैं।

सैन्य व्यवस्था

सैनिक की धार्मिक आस्था सैन्य नियमों का उल्लंघन नहीं

सैय्यद खालिक अहमद

क्या हिंदू या सिख बहुत रेजिमेंट में गैर-हिंदू सैनिक को मंदिर के अनुष्ठानों में भाग लेना या गुरुद्वारे में प्रार्थना का नेतृत्व करना अनिवार्य होना चाहिए? क्या ऐसे कार्य करने से इनकार करना यदि वे किसी की धार्मिक मान्यताओं के विपरीत हो, क्या उसे अनुशासनहीनता माना जा सकता है?

ये प्रश्न दिल्ली उच्च न्यायालय के हाल ही के एक फैसले से संबंधित हैं, जिसने भारतीय सेना से प्रोटेस्टेंट ईसाई लेफ्टिनेंट सैमुअल कमलेसन की बर्खास्तगी को बरकरार रखा। कमलेसन मुख्य रूप से सिख सैनिकों की बनी एक टुकड़ी का नेतृत्व करते थे। उन्होंने रेजिमेंटल प्रोटोकॉल का पालन से किया और हर हफ्ते अपने सैनिकों को गुरुद्वारा तक ले गए। हालाँकि उन्होंने पवित्र स्थान में प्रवेश करने या प्रार्थना का नेतृत्व करने से इनकार कर दिया, क्योंकि ऐसा करना उनकी ईसाई मान्यताओं का उल्लंघन था। उनका अनुरोध था कि सब रेजिमेंटल सामंजस्य को बाधित किए बिना उनके व्यक्तिगत विश्वास का सम्मान करें। फिर भी उनके वरिष्ठों ने इस कृत्य को उनकी अवज्ञा के रूप में माना।

अदालत ने सहमति जताते हुए कहा कि कमलेसन ने अपने धर्म को अपने अधिकारियों के वैध आदेश से ऊपर रखा था। यह मामला सिर्फ एक सैनिक का नहीं है। यह भारतीय सशस्त्र बलों के लिए गंभीर चिंता का विषय है, जिसमें विभिन्न धर्मों के कर्मी शामिल हैं, जबकि सैन्य अनुशासन आवश्यक है, लेकिन यह भारतीय संविधान के तहत गारंटीकृत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करके नहीं आना चाहिए। विशेष रूप से किसी के धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता।

कमलेसन का मामला सेना की परम्परागत प्रथाओं को सामने लाता है। उदाहरण के लिए राजपूत रेजिमेंट जैसी रेजिमेंट्स में युद्ध के नारे लगाने का रिवाज़ है -बोल बजरंग बली की जय। क्या किसी ईसाई या मुस्लिम सैनिक को ऐसे देवता का नारा लगाने के लिए मजबूर किया जा सकता है जो उनकी धार्मिक मान्यताओं के विपरीत हो? अगर वे मना करते हैं, तो क्या उन्हें अनुशासनहीनता के लिए दंडित किया जा सकता है? क्या एक गैर-मुस्लिम अधिकारी को नमाज़ का नेतृत्व करने के लिए मजबूर किया जाएगा, अगर वह मुस्लिम सैनिकों के एक दस्ते का नेतृत्व करता है, जबकि इस्लामी कानून गैर-मुस्लिमों को ऐसा करने से रोकता है।

ये अमूर्त प्रश्न नहीं हैं। वे सेना की एकरूपता की आवश्यकता और धार्मिक स्वतंत्रता की संवैधानिक गारंटी के बीच तनाव को उजागर करते हैं। इस मामले में कमलेसन ने धार्मिक प्रथाओं का पूरी तरह से विरोध नहीं किया। अपने सैनिकों के साथ मंदिर परिसर में जाकर उन्होंने उनकी आस्था के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। उनकी एकमात्र आपत्ति यह थी कि उन्हें ऐसे अनुष्ठान करने के लिए मजबूर किया जा रहा था, जो सीधे उनके अपने धर्म के अनुष्ठानों के विपरीत थे।

इस फैसले में कहा गया है कि जब किसी अधिकारी की धार्मिक मान्यताएँ सैन्य परंपरा से टकराती हैं, तो सैन्य अनुशासन लागू होना चाहिए। लेकिन क्या ऐसा होना चाहिए? अगर कमांड ही किसी सैनिक को मौलिक अधिकार का उल्लंघन करने के लिए मजबूर करती है, तो क्या इनकार को दंडनीय अपराध माना जा सकता है।

आलोचक यह तर्क दे सकते हैं कि व्यक्तिगत मान्यताओं को समायोजित करने के लिए रेजिमेंटल परंपराओं में बदलाव करने से अनुशासन कमज़ोर हो सकता है और ये ख़तरनाक मिसालें बन सकती हैं। लेकिन यह भी तर्क है कि विविधता के प्रति सम्मान सामंजस्य को कमज़ोर करता है। वास्तव में अधिक समावेशी दृष्टिकोण हर सैनिक की गरिमा की पुष्टि करके विश्वास और मनोबल को मज़बूत कर सकता है।

सेना, देश की सबसे अनुशासित संस्था होने के बावजूद संवैधानिक जांच से मुक्त नहीं होनी चाहिए। अगर सैनिकों से देश के लिए मरने के लिए कहा जाता है, तो कम से कम उन्हें अपने रैंक के भीतर अपने धर्म के अनुसार जीने का अधिकार मिलना चाहिए। यह विचार कि व्यक्तिगत विश्वास के प्रति करना चाहिए कि सामूहिक लोकाचार सम्मान अनुशासन से समझौता करता है, फिर से विचार किया जाना चाहिए। इसके बजाय की अनुशासन को विविधता के रुप में

समायोजित करके व्यक्तिगत मत व अखंडता दोनों को सम्मान दिया जाए। कमलेसन का मामला एक व्यापक नैतिक और संस्थागत दुविधा को दर्शाता है। उन्होंने अपने सैनिकों की धार्मिक आस्था को चुनौती नहीं दी। उन्होंने केवल अपने विश्वासों से अलग अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदारी से छूट मांगी थी, लेकिन उनकी बर्खास्तगीसंदेश देती है कि भारतीय सेना में सेवा करने के लिए, किसी को भी अपने धार्मिक विश्वास को दबाना पड़ सकता है, यदि वह सेना की स्थापित प्रथाओं से टकराता है।

सशस्त्र बलों के लिए विकास का समय आ गया है। रेजिमेंटल परंपराएँ बहिष्कार या दबाव का साधन नहीं बननी चाहिए। सेना को समावेशी विकल्प तलाशने चाहिए, जैसे कि सभी धर्मों के लिए पूजा स्थल या अनुष्ठानों में वैकल्पिक भागीदारी हो, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई भी स्वंय को सैनिक हाशिये पर महसूस न करे।

भारत का संविधान धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है। यह अधिकार किसी छावनी के द्वार पर नहीं रुकना चाहिए। ऐसे देश में जहां सैनिक विभिन्न धर्मों

से आते हैं, धर्म के मामलों में अनुरूपता को मजबूर करना न तो संवैधानिक है और न ही नैतिक। पुराने मानदंडों को लागू करने के बजाय, सेना को उदाहरण पेश करना चाहिए, जिसमें धर्मनिरपेक्ष और बहुलवादी मूल्यों को दर्शाया गया हो और जिनकी रक्षा करने की शपथ उसने ली है। किसी सैनिक की आस्था को हथियार नहीं बनाया जाना चाहिए, न ही उसे अनुशासन के लिए खतरा माना जाना चाहिए। इसके बजाय यह उसकी स्वतंत्रता का हिस्सा है, जिसकी रक्षा करने का उसने संकल्प लिया है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

♦♦

दिल्ली उच्च न्यायालय के हाल ही के एक फैसले के केंद्र में हैं, जिसने भारतीय सेना से प्रोटेस्टेंट ईसाई लेफ्टिनेंट सैमुअल कमलेसन की बर्खास्तगी को बरकरार रखा। कमलेसन मुख्य रूप से सिख सैनिकों बनी एक टुकड़ी का नेतृत्व करते थे। उन्होंने रेजिमेंटल प्रोटोकॉल का पालन से किया और हर हफ्ते अपने सैनिकों को गुरुद्वारा तक ले गए। हालाँकि, उन्होंने पवित्र स्थान में प्रवेश करने या प्रार्थना का नेतृत्व करने से इनकार कर दिया, क्योंकि ऐसा करना उनकी ईसाई मान्यताओं का उल्लंघन था। उनका अनुरोध सरल था। रेजिमेंटल सामंजस्य को बाधित किए बिना उनके व्यक्तिगत विश्वास का सम्मान करें। फिर भी, उनके वरिष्ठों ने इस कृत्य को अवज्ञा के रूप में व्याख्यायित किया। अदालत ने सहमति जताते हुए कहा कि कमलेसन ने अपने धर्म को अपने अधिकारियों के %वैध आदेश से ऊपर रखा था। यह मामला सिर्फ एक सैनिक का नहीं है। यह भारतीय सशस्त्र बलों के लिए गंभीर चिंता का विषय है, जिसमें विभिन्न धर्मों के कर्मी शामिल हैं। जबकि सैन्य अनुशासन आवश्यक है, लेकिन यह भारतीय संविधान के तहत गारंटीकृत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करके नहीं आना चाहिए विशेष रूप से, किसी के धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता। कमलेसन का मामला सेना की परम्परागत प्रथाओं को सामने लाता है।

♦♦

1975 का आपातकाल : जब 'आंधी' पर लगा था प्रतिबंध

अमिताभ श्रीवास्तव

जून 25, 1975 को आपातकाल लगाए जाने की तारीख हमें हर बार याद दिलाई जाती है, लेकिन इस बार यह और भी अधिक चर्चा में है क्योंकि इसे 50 साल हो गए हैं। जब जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के बाद इंदिरा गांधी ने इसे लागू किया था। यह आंदोलन तत्कालीन प्रधानमंत्री को हटाने के राजनीतिक आंदोलन में बदल गया था, जब इलाहाबाद हाई कोर्ट का फैसला उनके खिलाफ आया था। इस बार मोदी सरकार संसद का एक विशेष सत्र बुला सकती है ताकि उस दौर की यादें और तीखी कर सके।

मजेदार बात यह है कि आपातकाल को लेकर सबसे ज्यादा गुस्सा उन लोगों में है जिन्होंने उसे देखा नहीं। मैं उन लोगों में हूं, जिन्होंने उसे न केवल आपातकाल देखा, बल्कि झेला भी है और 2014 से अब तक की सरकार को भी देखा है। इस लेख में मैं नेताओं को देशद्रोह के आरोप में जेल भेजने की बात नहीं कर रहा, बल्कि एक बेतुके साहित्य के छात्र की छवि इंदिरा गांधी से मिलती-जुलती है। उन्हें धूम्रपान और शराब पीते हुए दिखाकर नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मुझे याद है कि यह फिल्म 14 फरवरी 1975 को रिलीज हुई थी और महज पांच महीने बाद प्रतिबंधित कर दी गई थी, क्योंकि यह अफवाह फैलाई गई कि मुख्य किरदार आरती देवी (सुचित्रा सेन) को इंदिरा गांधी के व्यक्तित्व के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

भले ही कहानी का एक किरदार इंदिरा गांधी से मेल खाता हो, लेकिन वह अब इतिहास बन चुका है। हम इसे उसके काव्यात्मक सौंदर्य के लिए देख रहे थे और गुलज़ार के अमर गीतों और एस.डी. बर्मन के संगीत से फिल्म अविस्मरणीय हैं। जब में 25 वर्ष का था और पहली बार आंधी देखी थी, तो हम इतने मंत्रमुग्ध हो गए थे कि जब फिल्म प्रतिबंधित हुई. तो मेरे दोस्त और मैं केवल गीत सुनने के लिए म्यूज़िक शॉप जाते थे- हमारे पास रिकॉर्ड प्लेयर नहीं था।

अब पचास साल बाद जब मैंने टीवी पर इसे फिर से देखा, तो मैं फिर से गुलज़ार साहब की जादुई दुनिया में लौट गया। हर संवाद, हर भाव, हर आंखों और होंठों की हलचल, संजीव कुमार और सुचित्रा सेन की हर एक अदा बस मन को मोह लेने वाली है।

यह किसी परी कथा जैसा था, जिसमें मैं खुद को ऐलिस की तरह उस जादुई दुनिया में खोने को तैयार था- एक ऐसी दुनिया जिसे हाल ही में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित गीतकार-निर्देशक गुलज़ार ने निर्देशित किया था और जे. ओम प्रकाश ने निर्मित किया था। भला कोई ऐसी कलाकृति पर प्रतिबंध लगाने

दिलचस्प बात यह है कि जब यह फिल्म रिलीज के लिए तैयार थी, तो इंदिरा गांधी ने अपने सूचना एवं प्रसारण मंत्री आई.के. गुजराल और दो अधिकारियों से पूछा था कि क्या यह फिल्म देखने लायक है। गुजराल, जो स्वयं एक कवि और कला-प्रेमी थे, उन्होंने इसे मंजूरी दे दी थी। एक सशक्त महिला और वह भी एक राजनीतिज्ञ, यदि किसी दृश्य में धूम्रपान करते हुए दिखाई गई हो, तो आज तो यह आम बात है। लेकिन उस समय, जब हम साहित्य के छात्र थे, हमें उस फिल्म में सबसे ज्यादा भाए थे वे छोटे-छोटे पल जो जीवन की सादगी और काव्यता से भरपूर थे।

◆◆

की सोच भी कैसे सकता है?

दिलचस्प बात यह है कि जब यह फिल्म रिलीज के लिए तैयार थी, तो इंदिरा गांधी ने अपने सूचना एवं प्रसारण मंत्री आई.के. गुजराल और दो अधिकारियों से पूछा था कि क्या यह फिल्म देखने लायक है। गुजराल, जो स्वयं एक कवि और कला-प्रेमी थे, उन्होंने इसे मंजूरी दे दी थी। एक सशक्त महिला और वह भी एक राजनीतिज्ञ, यदि किसी दृश्य में धूम्रपान करते हुए दिखाई गई हो, तो आज तो यह आम बात है। लेकिन उस समय, जब हम साहित्य के छात्र थे, हमें उस फिल्म में सबसे ज़्यादा भाए थे वे छोटे-छोटे पल जो जीवन की सादगी और काव्यता से भरपूर थे।

संजीव कुमार और सुचित्रा सेन की होटल में पहली मुलाकात वर्षों बाद, अलगाव के बाद एक चिंगारी की तरह थी। वह दरवाजे पर खड़ी हैं, बालों में हल्की सफेदी लिये और वह इतने हैरान होते हैं कि उन्हें अंदर आने का निमंत्रण देना भी भूल जाते हैं। वह धीरे से पूछती हैं, अंदर आने को नहीं कहोगे? और जादू वहीं से शुरू होता है। वह कमरे को देखती हैं और छत की ओर देखकर पूछती हैं, ये मूंछें क्यों रख लीं? संजीव कुमार हैरानी से कहते हैं, बस ऐसे ही। फिल्म अतीत और वर्तमान के बीच झूलती है, और हमें यह अहसास कराती है कि यदि उसके पिता ने उसे राजनीति में न झोंका होता, तो उसका जीवन और करियर कुछ और हो सकता था और शायद उसका वैवाहिक जीवन भी बच सकता था।

जब बेटी के नामकरण की बात आती है तो वह मनोहरमा कहता है, आरती कहती है यह नाम किसी मोटी महिला की याद दिलाता है। दर्शक मुस्कराते हैं। वह कहता है मन रख लेते हैं, वह कहती है यह बहुत छोटा है। तो वह कहता है चलो दो बार कह देते हैं- मन मन। ऐसी ही सहज हास्य और कोमल भावनाओं से भरी है उनकी शुरुआती शादीशुदा ज़िंदगी-एक ऐसी ज़िंदगी जिसकी नींव कविता और समझदारी पर रखी गई थी।

जून 1975 की आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर यह लेख आंधी फिल्म के प्रतिबंधित होने की याद ताजा करता है-जहां इंदिरा गांधी से मिलती भूमिका के कारण इस काव्यात्मक राजनीतिक ड्रामे को हटाया गया था। 50 साल बाद भी आंधी की भाव-भरी कहानी, संजीव कुमार-सुचित्रा सेन की अदाओं और गुलज़ार की जादुई पटकथा दिल छू जाती है। यह लेख एक पुरानी याद की तरह

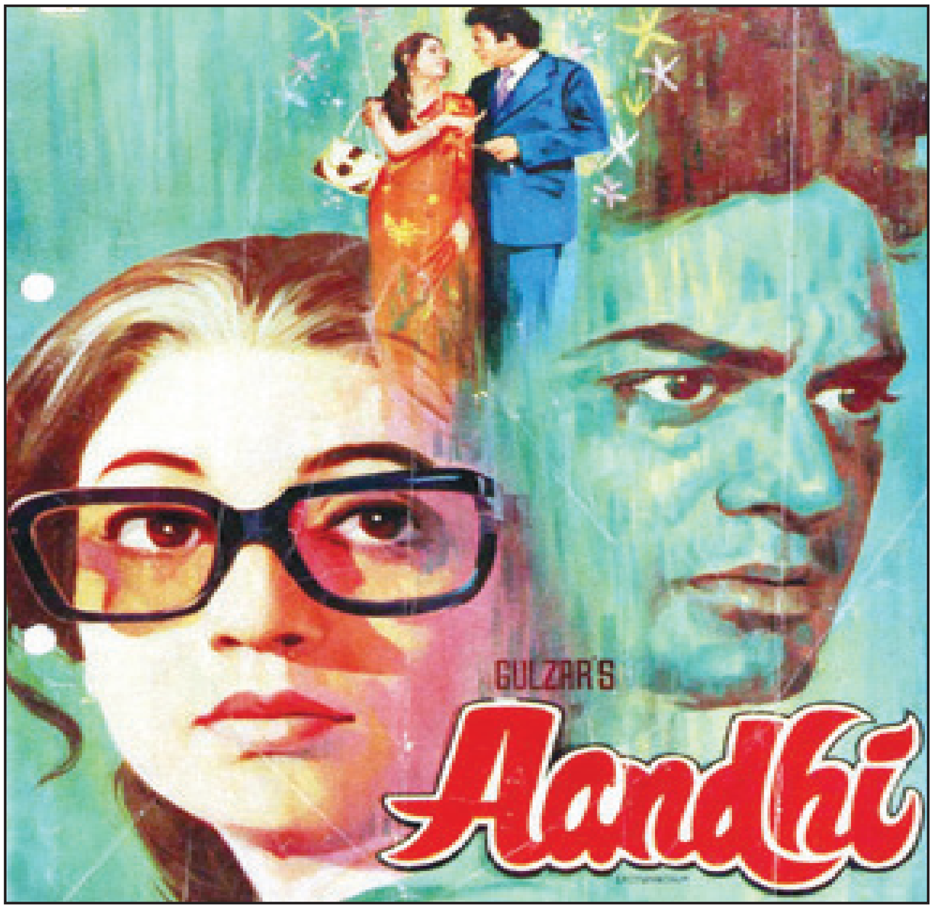

हमें चेतावनी देता है कि कला और इतिहास कभी पुराने नहीं होते, वे हमारी संवेदनशीलता और सोच को आज भी सजग बनाते हैं।

एक पिता ने अपनी बेटी को राजनीति में धकेल दिया, उसने स्वाभिमानी पति और बच्चे को छोड़ दिया, जो उस समय अक्षम्य था और यहीं से उनके बीच दूरी आ गई। आलोचकों ने इसे इंदिरा गांधी की हूबहू कहानी मान लिया, विशेषकर उनकी पार्टी के आलोचकों और फिर भगवा खेमा भी इसमें कूद पड़ा। फिल्म में राजनीतिक जीवन की भी भरपूर और बेबाक झलक है। उसका राजनीतिक सलाहकार (ओम प्रकाश) उससे कहता है कि चुनावों तक बिस्तर नहीं बल्कि गद्दे पर सोना है।

उसके सिर पर पत्थर लगने पर उसकी प्रतिक्रिया एक मास्टरस्ट्रोक है - जब पार्टी नेता डॉक्टर बुलाना चाहते हैं, ओम प्रकाश कहता है, भइये डॉक्टर है। बाद में आएगा, पहले मीडिया को बुलाओ। यह दांव उसके लिए काम करता है- और फिल्म के लिए भी। हमें बताया गया है कि फिल्म को आपातकाल लागू होने के बाद 1975 में प्रतिबंधित किया गया, लेकिन फिल्म इतिहासकार कहते हैं कि जब यह फिल्म 14 फरवरी 1975 को रिलीज हुई थी, तो इसे खास प्रतिक्रिया नहीं मिली थी।

इसका कारण थी कि तब तक संजीव कुमार को तब तक एक लीड अभिनेता नहीं माना जाता था और सुचित्रा सेन को हिंदी सिनेमा में कोई खास पहचान नहीं मिली थी। यह उनकी देवदास और बंबई का बाबू के बाद तीसरी हिंदी फिल्म थी।

इस फिल्म को एक परिपक्व प्रेम कथा इसे अलग पहचान दिलाती है।एक ऐसे विवाहित जोड़े की प्रेम कहानी, जो अब सफेद बालों वाले हैं। इस फिल्म में लेकिन उनका राजनीतिक पक्ष नहीं है। ये विवाह के वर्षों बाद भी एक-दूसरे के प्रति स्नेह, रोमांस और देखभाल के अधिकार को पुन: स्थापित करती है - जैसे वे अभी-अभी प्रेम में पड़े हों। हालांकि बाद में ऐसी कई पारिवारिक फिल्में आईं, जैसे राजेश खन्ना की कुछ फिल्में या बागबान जिसमें अमिताभ बच्चन और हेमा मालिनी थे लेकिन आंधी की कुछ और ही बात थी। इसके गीतों में सब कुछ कह दिया गया है-

तुम आ गए हो, नूर आ गया है नहीं तो चरागों से लौ जा रही थी।

जीने की तुमसे वजह मिल गई है, बड़ी बेवजह ज़िंदगी जा रही थी।।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

औरंगजेब के मकबरे पर आरएसएस के दो टूक

अमिताभ श्रीवास्तव

कुणाल कामरा की तरह राजीव निगम भी एक जाने-माने कॉमेडियन हैं। उन्होंने चार हफ्ते पहले एक वीडियो बनाई 'औरंगजेब का रायता'। उसके एक हफ्ते बाद 'कब्र और सब्र' बनाई और अब वीडियो आया है 'यार यह औरंगजेब कहां खो गया?' इन तीन सुर्खियों की मदद से औरंगजेब आलमगीर से सम्बन्धित आरएसएस के दिलचस्प और हैरत-अंगेज रवैये को समझा जा सकता है।

पहले तो संघ परिवार ने इस मामले को इतना उछाला कि नागपुर में साम्प्रदायिक दंगा हो गया। राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस तीर से कई शिकार खेलने की कोशिश की, मगर सारे निशाने चूक गए और वह वक्त भी आया कि जब खुद आरएसएस ने उनके हाथों से सारे तरकश छीनकर कूड़ेदान में डाल दिए। इस विवाद के दौरान बैगलुरू में आरएसएस की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा की बैठक से देवेंद्र फडणवीस को जो आशाएं लगी थीं, उन पर ओस पड़ गई। आरएसएस के वरिष्ठ नेता सुरेश भैयाजी जोशी ने बैठक के दौरान औरंगज़ेब के मक़बरे से सम्बन्धित दोटूक अंदाज़ में जवाब दे दिया कि यह मामला अकारण ही उठाया गया है।

भैयाजी के इस संक्षिप्त से वाक्य ने देवेंद्र फडणवीस के प्रधानमंत्री बनने का सपना चकना-चूर कर दिया, क्योंकि अमित शाह और योगी आदित्यनाथ इसी तरह की भड़काऊ बयाबाज़ी से अपनी सियासत चमकाकर मोदी के उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं। आरएसएस ने औरंगज़ेब को ग़ैर-ज़रूरी क़रार देकर फडणवीस को बेसहारा कर दिया, क्योंकि नागपुर में रहकर संघ को आँखें दिखाना कम-से-कम बीजेपी मुख्यमंत्री के तो बस की बात नहीं है। भैयाजी जोशी ने बहुत ही सादगी से कहा कि चूँकि औरंगज़ेब का निधन यहाँ हुआ, इसलिए क़ब्र भी यहीं है और जिनको श्रद्धा है वे इस मक़बरे पर जाएँगे। उन्होंने शिवाजी की मिसाल देकर कहा कि वे हमारे आदर्श हैं और उन्होंने अफ़ज़ल ख़ान का मक़बरा बनवाया था। यह भारत की उदारता और सहनशीलता का प्रतीक है। वे बोले- औरंगज़ेब की क़ब्र रहे और जिसको वहाँ जाना है वह जाए इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इस बयान ने विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के मुँह पर ऐसा करारा तमाचा मारा कि अक़्ल ठिकाने आ गई और क़ब्र को उखाड़ने वाले अपनी समाधि में दुबककर बैठ गए।

महाराष्ट्र की सियासत में राज ठाकरे हिंदुत्व की बुलंद आवाज़ हैं। उन्होंने 'छावा' देखकर जागनेवाले हिन्दुओं की संभाजी महाराज के बलिदान से अनभिज्ञता को शर्मनाक बताया और मशवरा दिया कि इतिहास जानने के लिए व्हाट्सऐप के बजाय किताबें पढ़ना चाहिए। 'छावा' नामक फ़िल्म किसी ऐतिहासिक दस्तावेज़ पर नहीं, बल्कि एक उपन्यास पर आधारित है।

इस फ़िल्म के अंदर रुपया कमाने की ख़ातिर बहुत अधिक अतिश्योक्ति से काम लिया गया है। राज ठाकरे ने भी अफ़ज़ल ख़ान के मक़बरे का ज़िक्र करके कहा कि उसका निर्माण शिवाजी की मर्ज़ी के बिना सम्भव नहीं था। एनडीए के गठबन्धक केन्द्रीय मंत्री रामदास उठावले ने तक औरंगज़ेब आलमगीर की क़ब्र के नाम पर सियासत को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि औरंगज़ेब का निधन 1707 अभी क्यों हटाया जाए?

अठावले ने पूछा, पिछले 300 वर्षों में क़ब्र को हटाने का मुद्दा क्यों नहीं उठाया गया? औरंगज़ेब की क़ब्र को हटाने से कुछ हासिल नहीं होगा, इसलिए उसे नहीं हटाया जाना चाहिए। साथ ही उन्होंने मश्वरा दिया कि मुसलमानों को ख़ुद ही इस क़ब्र से दूर रहना चाहिए और हिंदुओं को उसे हटाने की माँग नहीं करनी चाहिए। इस क़ब्र की सुरक्षा एएसआई के ज़िम्मे है। केन्द्रीय मंत्री के अनुसार हिंदुओं और मुसलमानों की लड़ाई देश के लिए अच्छी नहीं है, सबको विकास पर ध्यान देना चाहिए।

रामदास उठावले महाराष्ट्र के नीतीश कुमार हैं, यानी वे हमेशा सत्तापक्ष के साथ रहते हैं। इसलिए उन्हें इस वास्तविकता का ज्ञान ज़रूर ही होगा कि औरंगज़ेब आलमगीर का विवाद अपने निजी

राजनैतिक विकास के लिए ही तो उठाया जा रहा है। कोई उसके द्वारा अपना क़द बढ़ाकर सरकार दरबार में जगह बनाना चाहता है और कोई तो प्रधानमंत्री बन जाना चाहता है। ख़ैर, औरंगज़ेब आलमगीर के हवाले से यह समझदारी की बातें अगर नागपुर दंगे से पहले होतीं तो इस दुर्घटना को टाला जा सकता था।

अवसरवादिता के लिए बदनाम राज या उठावले से अलग हटकर आरएसएस की बुद्धिमत्ता और इसमें असाधारण विलम्ब का विश्लेषण किया जाना चाहिए। आरम्भ में संघ को अंदाज़ा नहीं था कि 'बात निकलेगी तो (कितनी) दूर तलक जाएगी'? इस ख़तरे को अगर समय से पहले भाँप लिया जाता तो शुरू में ही मुख्यमंत्री को मना करके रुस्वाई से बचा जा सकता था, मगर फ़िल्म 'छावा' के नफ़रत फैलाने से संघ परिवार की बाछें खिल गई थीं। इसमें पहली रुकावट उस वक़्त आई जब संभाजी पर सावरकर और गोलवलकर के लेख सोशल मीडिया में आने शुरू हुए।

इन लोगों ने संभाजी को न सिर्फ़ अयोग्य शासक, बल्कि सुरा-सुन्दरी का रसिया तक लिख छोड़ा है। इस तरह गोया औरंगज़ेब आलमगीर के मामले में 'पासबाँ मिल गए काबे को सनम-ख़ाने से'। आरएसएस के लोगों के लिए यह धरम-संकट था कि वे इन दो 'बुद्धिजीवियों' का न तो खंडन कर सकते थे, न पुष्टि कर सकते थे, ऐसे में सवाल था कि आख़िर करें तो क्या करें?

ऐतिहासिक तथ्यों की खोज-बीन शुरू हुई तो पता चला कि शिवाजी के पोते शाहू जी ने ख़ुद औरंगज़ेब की क़ब्र पर जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की थी। आगे चलकर रहस्योद्घाटन हुआ कि संभाजी ने औरंगज़ेब के साथ मिलकर अपने पिता शिवाजी से बग़ावत की थी और क़ैद हुए थे। उन्होंने अपने सौतेले भाई राजाराम के दावे को कमज़ोर करने की ख़ातिर सौतेली माँ के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था। इस तरह दृश्य बदल रहा था तो पता चला कि औरंगज़ेब तो उन्हें छोड़ देना चाहते थे, मगर ब्रह्मणों ने मनुस्मृति के अनुसार सज़ा देने पर आग्रह कर दिया।

यह एक वास्तविकता है कि आलमगीर ने ऐसी सख्त सजा किसी और दुश्मन को नहीं दी और इसके पीछे उनकी इस्लाम-पसंदी नहीं थी, क्योंकि इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता, बल्कि संभाजी से नफ़रत करनेवाले ब्रह्मणों की साज़िश थी जो शैवशाही ख़त्म करने के बाद पेशवाई कायम करना चाहते थे। इन तथ्यों ने सब कुछ बदल दिया और संघ परिवार पर यह शेर फिट हो गया—

ये उज़्रे-इम्तिहाने-जज़्बे-दिल कैसा निकल आया।
मैं इल्ज़ाम उसको देता था क़ुसूर अपना निकल आया।।

'छावा' फिल्म के विवाद में संभाजी महाराज की गिरफ्तारी के हवाले से दिखाए जानेवाले शिरके खानदान के चरित्र ने तो पूरी बाज़ी ही उलट दी? इस पर सबसे पहले तो इस परिवार के लोगों ने एतिराज करके मानहानि का दावा करने की धमकी दे दी। फिल्म निर्माता ने तुरंत माफी माँगकर स्वयं ही सच्चाई बयान करने का दावा पंचर कर दिया, लेकिन बात वहीं नहीं रुकी।

इन तथ्यों पर बहुत निर्भीकतापूर्ण ढंग से ऐतिहासिक तथ्य बयान करनेवाले मराठी इतिहासकार इंद्रजीत सावंत की सत्यवादिता आख़िरकार संघी ब्रह्मणों के लिए असहनीय हो गई और इसी तरह के मौके पर लोग ऐसी ग़लती कर जाते हैं जिनके बारे में कहा जाता है 'लम्हों ने ख़ता की थी सदियों ने सज़ा पाई'। नागपुर के एक ब्राह्मण पत्रकार प्रशांत कोरटकर ने मुख्यमंत्री से निकटता के घमंड में मुब्तला होकर अपने पैरों पर ऐसी कुल्हाड़ी चलाई कि फडणवीस का भी सिर फूट गया।

प्रशांत कोरटकर ने फोन करके इंद्रजीत सावंत को सचेत किया कि फिलहाल महाराष्ट्र में ब्राह्मणों की फडणवीस सरकार है, बल्कि उन्हें अपनी सीमाओं में रहने की धमकी भी दे डाली। उस बेवक़ूफ़ ने बयानबाजी के जोश में शिवाजी महाराज सहित उनकी पत्नी के बारे में भी अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर दिया। ऐसा करते हुए वह भूल गया कि फोन टेप भी हो सकता है।

बस फिर क्या था, इंद्रजीत सावंत ने जब वह टेप मीडियावालों के हवाले किया तो कोरटकर की ख़ाकी नेकर ढीली हो गई। उसने पहले तो टेप को बिगाड़ने का इल्ज़ाम लगाया और फिर शिवाजी की प्रशंसा में एक वीडियो भी जारी करके सफ़ाई पेश की, लेकिन यह नौटंकी बेकार साबित हो गई, उलटा इस दौरान उसे मिलनेवाली सरकारी सुरक्षा ने मुख्यमंत्री के लिए मुश्किलें बढ़ा दीं। इतना कुछ हो जाने के बाद भी उसे गिरफ्तार करने के बजाय फ़रार होने का मौक़ा देना देवेंद्र फडणवीस का अक्षम्य अपराध था, जिसकी उन्हें सज़ा मिल रही है।

नागपुर दंगे के द्वारा इस गलती की ओर से ध्यान भटकाने की कोशिश भी जब नाकाम हो गई तो उसे न चाहते हुए भी गिरफ्तार करना ही पड़ा। एक महीने के बाद उसको तेलंगाना में गिरफ्तार किया गया तो वह रोल्स राइस गाड़ी में था। इससे पता चला कि वह पत्रकार नहीं, बल्कि सत्तापक्ष का दलाल है और गुवाहाटी में लेन-देन के वक्त मौजूद था। कोरटकर को गिरफ्तार करके कोल्हापुर लाया गया तो सैकड़ों लोग अपने ग़मो-ग़ुस्से का इज़हार करने के लिए सड़कों पर मौजूद थे। वे चप्पलों से उसका स्वागत करना चाहते थे। उसको अदालत के अंदर एक वकील ने मारा-पीटा किया और राज्य का मुख्यमंत्री न तो अपने दोस्त को बचा सका और न उसके हमला-आवर पर कोई कार्रवाई कर सका।

इस स्थिति ने संघ की अक़्ल ठिकाने लगा दी और उसने मामले को रफ़ा-दफ़ा करने का फैसला किया। काश, संघ के लोग इतने अधिक नासमझ न होते कि एक महीने के अंदर घटित होनेवाले इन परिवर्तनों को भी भांप न पाते! वे अगर समय रहते अपने ग्रुप के मुख्यमंत्री पर लगाम लगा देते तो इस रुस्वाई से बचा जा सकता था, लेकिन उन्हें यह बात नहीं सूझी। इसलिए अब शान्ति और सौहार्द का यह प्रवचन निरर्थक हो गया है। उन पर 'मुज़तर' ख़ैराबादी का यह शेर फिट बैठता है—

पूछा सता के रंज क्यों बोले कि पछताना पड़ा
पूछा कि रुस्वा कौन है बोले दिल-आज़ारी मेरी।।

(लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कृषि उपज में रिकॉर्ड वृद्धि निर्यात की अपार संभावनाएं

भारत का कृषि क्षेत्र नए क्षेत्रों में प्रवेश कर रहा है क्योंकि रिकॉर्ड तोड़ खाद्य उत्पादन वैश्विक निर्यात बाजारों में मजबूत उपस्थिति के लिए मंच तैयार करता है। जबकि खेत फल-फूल रहे हैं, औद्योगिक परिदृश्य में एक विपरीत तस्वीर उभर रही है, जहां स्थिर उत्पादन अंतर्निहित आर्थिक तनाव का संकेत देता है। यह विचलन भारत के विकास की कहानी में एक बदलते संतुलन को रेखांकित करता है- लड़खड़ाती फैक्ट्रियों के बीच खेतों में तेजी।

इसे और गति देने के लिए, केंद्र ने दालों, तिलहन और मोटे अनाजों पर ध्यान केंद्रित करते हुए खरीफ फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में भी वृद्धि की। धान के लिए MSP में 69 रुपये यानी तीन प्रतिशत की वृद्धि करके इसे 2369 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया। मूंगफली, सूरजमुखी के बीज, कपास, तुअर/अरहर, नाइजर बीज सहित 14 अन्य वस्तुओं के MSP में वृद्धि की गई है। केंद्र का दावा है कि गेहूं की उसकी खरीद पिछले तीन साल के रिकॉर्ड को पार कर गई है, फिर भी लक्ष्य से कम है। किसान क्रेडिट कार्ड पर 3 लाख रुपये तक के ऋण पर 5 प्रतिशत ब्याज सहायता योजना जारी रहेगी।

कृषि उपज के इस तरह के लाभ के बीच, औद्योगिक उत्पादन में कमी चिंता का विषय बनी हुई है। खनन, बिजली और विनिर्माण क्षेत्रों में मंदी के कारण अप्रैल में देश की औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर 8 महीने के निचले स्तर पर आ गई। अप्रैल 2024 में 6.2 प्रतिशत के शिखर पर पहुंचने के बाद से यह गिरावट पर है, जो मध्य वर्ष के दौरान शून्य से 0.1 प्रतिशत नीचे गिर गई थी।

भारत ने 2024-25 के फसल सीजन में 353.95 मिलियन टन (MT) का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन हासिल किया है। यह मुख्य रूप से धान (चावल)- 1449.07 MT, गेहूं -117.50 MT और मक्का 42 MT की रिकॉर्ड फसल के कारण है। भारत चीन को पीछे छोड़कर दुनिया का सबसे बड़ा चावल उत्पादक बन गया है। मक्का उत्पादन में 12.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। तिलहन की पैदावार में भी 7.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

आंकड़ों से पता चलता है कि चावल, गेहूं, मक्का, सोयाबीन, रेपसीड, सरसों और गन्ने का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान कहते हैं. धान, गेहूं, सोयाबीन, मूंगफली, तिलहन और दालों जैसी प्रमुख फसलों का तीसरा अनुमानित उत्पादन रिकॉर्ड होने जा रहा है। यह कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के विपरीत है, जिसमें एक वर्ष पहले 8 साल का रिकॉर्ड खाद्यान्न अनुमान में आठ वर्षों में प्रमुख फसलों में 6.6 प्रतिशत की रिकॉर्ड वृद्धि का दावा किया गया है। चौहान ने घोषणा की कि देश का खाद्यान्न उत्पादन 2024-25 में 3539.59 लाख मीट्रिक टन (LMT) तक पहुंच गया,

प्रो. शिवाजी सरकार

♦♦

भारत का कृषि निर्यात 2024-25 में 6.4 प्रतिशत बढ़कर 51.9 बिलियन डॉलर हो जाएगा, जो मार्च 2024 को समाप्त पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 48.8 बिलियन डॉलर था। यह 2024-25 में इसके समग्र वस्तु निर्यात के मूल्य में वृद्धि से कम है। आईआईपी में गिरावट 2.7 प्रतिमात की अनुमानित गिरावट से कम बताई गई है। रेटिंग एजेंसी आईसीआरए के अनुसार, मंदी सभी क्षेत्रों में व्यापक है। अप्रैल में इंफ्रा और निर्माण सामान क्षेत्र की वृद्धि दर चार प्रतिशत रही, जबकि अप्रैल 2024 में यह 8.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है। 2024-25 में भारत के निजी क्षेत्र के पूंजीगत व्यय में भी गिरावट देखी गई, जो लगभग 9 प्रतिशत घटकर 26.8 लाख करोड़ रुपये रह गया। यह तीन साल का निचला स्तर और लगातार दूसरी साल-दर-साल गिरावट दर्शाता है। कृषि और उद्योग में ये दोनों ही घटनाक्रम राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अमेरिकी नीति में हेरफेर के मद्देनजर महत्वपूर्ण हैं।

♦♦

जो पिछले साल (2023-24) के 3322.98 LMT से 216.61 LMT अधिक है।

एक और उत्साहजनक खबर यह है कि भारत का कृषि निर्यात 2024-25 में 6.4 प्रतिशत बढ़कर 51.9 बिलियन डॉलर हो जाएगा, जो मार्च 2024 को समाप्त पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 48.8 बिलियन डॉलर था। यह 2024-25 में इसके समग्र वस्तु निर्यात के मूल्य में वृद्धि से कम है। आईआईपी में गिरावट 2.7 प्रतिमात की अनुमानित गिरावट से कम बताई गई है। रेटिंग एजेंसी आईसीआरए के अनुसार, मंदी सभी क्षेत्रों में व्यापक है। अप्रैल में इंफ्रा और निर्माण सामान क्षेत्र की वृद्धि दर चार प्रतिशत रही, जबकि अप्रैल 2024 में यह 8.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है। 2024-25 में भारत के निजी क्षेत्र के पूंजीगत व्यय में भी गिरावट देखी गई, जो लगभग 9 प्रतिशत घटकर 26.8 लाख करोड़ रुपये रह गया। यह तीन साल का निचला स्तर और लगातार दूसरी साल-दर-साल गिरावट दर्शाता है।

कृषि और उद्योग में ये दोनों ही घटनाक्रम राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अमेरिकी नीति में हेरफेर के मद्देनजर महत्वपूर्ण हैं। भारत टैरिफ व्यवस्था को नरम करने और संशोधित करने के लिए अमेरिका के साथ लंबी बातचीत कर रहा है, खास तौर पर ऐसे विश्व बाजार में जहां विश्व व्यापार संगठन सहित बहुपक्षीय संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं को दरकिनार किया जा रहा है। भारत ब्रिटेन व्यापार सौदों जैसे द्विपक्षीय लेन-देन की अधिकता वैश्विक व्यापार परिदृश्य को बदत रही है। विकासशील देश विशेष रूप से पीड़ित हैं क्योंकि उन्हें बातचीत पर अधिक प्रयास, समय और संसाधन खर्च करने पड़ रहे हैं।

स्थापित बहुपक्षीय मानदंडों को धीरे-धीरे दरकिनार किया जा रहा है। इसका असर उनके निर्यात और वैश्विक विकास पर पड़ रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध, भूमध्य सागर क्षेत्र के निकट संघर्ष की स्थिति और इजराइल-गाजा-मध्य पूर्व के मद्देनजर कृषि निर्यात के मुद्दे हैं। वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देने के कृषि निर्यात में तेजी के बीच औद्योगिक उत्पादन और निजी निवेश कमजोर, वैश्विक चुनौतियों से घिरा भारत। लिए भारत के लिए इनका समाधान करना महत्वपूर्ण है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद युद्ध विराम के बावजूद पाकिस्तान ने भारतीय एयरलाइनों के लिए अपने हवाई क्षेत्र पर प्रतिबंध नहीं हटाया है। इससे एयरलाइन उद्योग को नुकसान हो रहा है, क्योंकि हर उड़ान की लागत में 30 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। एयर इंडिया ने अनुमान लगाया है कि पाकिस्तान के चक्कर लगाने से उसे एक महीने में 100 मिलियन रुपये से अधिक का नुकसान हुआ है।

शेयर बाजार भी उथल-पुथल में है, जो जनवरी से भारी गिरावट के साथ बंद हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा टैरिफ बढ़ाए जाने और चीन की जवाबी कार्रवाई के कारण निवेशकों में घबराहट बढ़ गई है। इस बात की आशंका है कि पूर्ण व्यापार युद्ध से दुनिया भर में आर्थिक विकास प्रभावित हो सकता है।

नीति घोषणाओं की गति, स्थगन और संशोधनों के साथ, कंपनियों और अमेरिकी व्यापार भागीदारों के लिए अनिश्चितता को बढ़ा दिया है। एक अस्थिर व्यापार नीति वातावरण जारी रहने की संभावना है क्योंकि प्रशासन बातचीत जारी रखता है, अतिरिक्त क्षेत्रीय टैरिफ लगाने के लिए कदम उठाता है और टैरिफ से उत्पाद-विशिष्ट छूट के अनुरोधों की समीक्षा करता है. जबकि हाल ही में अमेरिकी संघीय न्यायालय ने ट्रम्प टैरिफ को खारिज कर दिया है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और मीडिया शिक्षक है)

■■■■

कृषि और उद्योग में ये दोनों ही घटनाक्रम राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अमेरिकी नीति में हेरफेर के मद्देनजर महत्वपूर्ण हैं। भारत टैरिफ व्यवस्था को नरम करने और संशोधित करने के लिए अमेरिका के साथ लंबी बातचीत कर रहा है, खास तौर पर ऐसे विश्व बाजार में जहां विश्व व्यापार संगठन सहित बहुपक्षीय संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं को दरकिनार किया जा रहा है। भारत ब्रिटेन व्यापार सौदों जैसे द्विपक्षीय लेन-देन की अधिकता वैश्विक व्यापार परिदृश्य को बदत रही है। विकासशील देश विशेष रूप से पीड़ित हैं क्योंकि उन्हें बातचीत पर अधिक प्रयास, समय और संसाधन खर्च करने पड़ रहे हैं।स्थापित बहुपक्षीय मानदंडों को धीरे-धीरे दरकिनार किया जा रहा है। इसका असर उनके निर्यात और वैश्विक विकास पर पड़ रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध, भूमध्य सागर क्षेत्र के निकट संघर्ष की स्थिति और इजराइल-गाजा-मध्य पूर्व के मद्देनजर कृषि निर्यात के मुद्दे हैं। वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देने के कृषि निर्यात में तेजी के बीच औद्योगिक उत्पादन और निजी निवेश कमजोर, वैश्विक चुनौतियों से घिरा भारत। लिए भारत के लिए इनका समाधान करना महत्वपूर्ण है।

भोजन और आस्था की स्वतंत्रता मांसाहार पर राजनीति

सलमान अहमद

न्याय और निष्पक्षता को महत्व देने वाले समाज में, व्यक्तियों को अपना भोजन चुनने का अधिकार होना चाहिए जब तक कि इससे उन्हें या दूसरों को कोई नुकसान न पहुंचे। फिर भी भारत में, भोजन के विकल्प धर्म, जाति, पहचान और राजनीति से गहराई से जुड़े हुए हैं। हम जो खाते हैं वह नैतिक प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक जुड़ाव और यहां तक कि हिंसा के लिए आधार बन गया है।

हाल के वर्षों में, आहार संबंधी कट्टरवाद का एक रूप सामने आया है, खास तौर पर प्रमुख सामाजिक समूहों द्वारा शाकाहारी मूल्यों को थोपना। यह सिर्फ़ व्यक्तिगत विश्वास या पशु अधिकारों के बारे में नहीं है- यह एक राजनीतिक दावा है। भारत को मूल रूप से शाकाहारी राष्ट्र के रूप में चित्रित करना इसकी विविध आबादी की वास्तविकताओं को अनदेखा करता है और उन समुदायों को हाशिए पर डालता है जहाँ मांस मुख्य भोजन है।

इस कथा ने मुसलमानों, ईसाइयों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों तथा तटीय या पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लोगों के खिलाफ सामाजिक पूर्वाग्रहों को और मजबूत किया है। ये समूह, जो पहले से ही प्रणालीगत भेदभाव का सामना कर रहे हैं, अब अपनी खान-पान की आदतों को लेकर कलंक का सामना कर रहे हैं। कुछ मामलों में, इसकी वजह से भीड़ द्वारा हिंसा की गई है, जो अक्सर परंपरा या धर्म की रक्षा के नाम पर की जाती है।

मिथक बनाम वास्तविकताः आंकड़े क्या कहते हैं। वैश्विक स्तर पर, शाकाहारी अल्पसंख्यक हैं। 28 देशों में 2018 के। PSOS सर्वेक्षण में पाया गया कि 90 प्रतिशत से अधिक लोग मांस खाते हैं। भारत में, वास्तविकता भी इसी तरह अलग-अलग है। NFHS-z डेटा

(2019-21) से पता चलता है कि 15-49 वर्ष की आयु के 83.4 प्रतिशत पुरुष और 70.6 प्रतिशत महिलाएं मांसाहारी भोजन खाती हैं। ये संख्याएं समय के साथ स्थिर या बढ़ी हैं। धर्म आहार मानदंडों को आकार

देने में एक भूमिका निभाता है, लेकिन यह विचार कि केवल मुसलमान और ईसाई ही मांस खाते हैं, एक मिथक है। वास्तव में 99 प्रतिशत ईसाई और मुसलमान तथा 97 प्रतिशत बौद्ध/नव-बौद्ध मांस खाते हैं।

इसके विपरीत धारणा के बावजूद 75 % से अधिक हिंदू मांस खाते हैं। यहां तक कि पारंपरिक रूप से शाकाहारी समुदायों में भी, 15 % जैन पुरुषों और 4 % से अधिक जैन महिलाओं ने मांस उपभोग की बात कही। वर्ग और जाति भोजन के पैटर्न को और भी आकार देते हैं। भारत के 90 % गरीब लोग मांस खाते हैं, जबकि सबसे अमीर 70 % लोग मांस खाते हैं। अनुसूचित जातियों और जनजातियों में, मांसाहार 87 % से अधिक है, जबकि उच्च जातियों (अन्य) में, यह 72 % के करीब है। मांस अक्सर प्रोटीन के मामले में अधिक सुलभ और सस्ता होता है, खासकर ग्रामीण या आदिवासी क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय वास्तविकताएं : भारत के केवल चार राज्य- पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात मुख्य रूप से शाकाहारी हैं। इसके विपरीत, पूर्वोत्तर और तटीय राज्य जैसे मिजोरम, केरल और आंध्र प्रदेश में मांसाहार की दर 97 % से अधिक है। तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में मछली और मांस मुख्य आहार हैं।

शहरी-ग्रामीण अंतर और लैगिक अंतर अभी भी कायम है। अमीर ग्रामीण परिवारों में, पुरुषों द्वारा महिलाओं की तुलना में मारा खाने की संभावना अधिक होती है जो पोषण तक लैगिक पहुंच को दर्शाता है।

धर्म और भोजनः एक सूक्ष्म दृष्टिकोण : धार्मिक आहार संबंधी नियम प्रायः लोकप्रिय धारणा से अधिक लचीले होते हैं। हिंदू धर्म में मांसाहार पर पूरी तरह प्रतिबंध नहीं है। प्राचीन ग्रंथों में मांसाहार और यहां तक कि पशु बलि का भी उल्लेख है। स्वामी विवेकानंद ने उल्लेख किया कि ऐतिहासिक रूप से, गोमांस का सेवन कुछ हिंदू संस्कारों का हिस्सा था।

इस्लाम मांस की अनुमति देता है लेकिन नैतिक वध की आवश्यकता है। हलाल भोजन प्रथाओं में करुणा और अनुशासन पर जोर देता है।

ईसाई धर्म में मांसाहार की अनुमति है, लेकिन अनुष्ठानिक बलि और पशुओं के उपचार के संबंध में नैतिक चेतावनियों हैं।

बौद्ध धर्म में व्यापक भिन्नता है। जहां कुछ महामान संप्रदाय सख्त शाकाहार की वकालत करते हैं. वहीं कई थेरवाद और तिब्बती बौद्ध कुछ शर्तों के साथ मांस खाने की अनुमति देते हैं। सिख धर्म अनुष्ठानिक मांस (जैसे हलाल) को हतोत्साहित करता है। लेकिन व्यक्तिगत आहार संबंधी स्वतंत्रता की अनुमति देता है।

जैन धर्म में अहिंसा पर आधारित सबसे सख्त नियम हैं। फिर भी यहाँ भी, कुछ अनुयायी मांस खाते हैं, जो सिद्धांत और दैनिक जीवन के बीच अंतर को दर्शाता है। ये उदाहरण दिखाते हैं कि धार्मिक भोजन के मानदंड एकसमान नहीं हैं। वे समय, क्षेत्र और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ के साथ विकसित होते हैं।

क्या मांस खाना बर्बरता है : कुछ हलकों में यह तर्क प्रचलित है कि मांस खाना क्रूर या असभ्य है, लेकिन इसमें कोई सूक्ष्मता नहीं है। मनुष्य सर्वाहारी के रूप में विकसित हुआ। पके हुए मांस ने मस्तिष्क के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जैसा कि रिचर्ड रंगहम और अन्य लोगों द्वारा किए गए मानवशास्त्रीय शोध में दिखाया गया है।

जैविक दृष्टिकोण से, मानव शरीर विज्ञान पौधे और पशु दोनों के उपभोग का समर्थन करता है। मांस बी 12 आयरन और ओमेगा-3 जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व प्रदान करता है जिन्हें केवल पौधों से प्राप्त करना मुश्किल है, खासकर कम आय वाले आहार में। इसके अलावा, क्रूरता सिर्फ मांस तक ही सीमित नहीं है। औद्योगिक फसल की खेती वनों की कटाई, मिट्टी के क्षरण और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाती है। नैतिक सुधार का लक्ष्य खाद्य उत्पादन का तरीका होना चाहिए, न कि क्या खाया जाता है।

आर्थिक रीढ़-मांस उद्योग : भारत के मांस और पशुधन उद्योग ग्रामीण आजीविका और राष्ट्रीय निर्यात के लिए महत्वपूर्ण हैं। 2023-24 में, भारत ने 3.74 बिलियन डॉलर मूल्य के भैंस के मांस का निर्यात किया, जिससे यह वैश्विक नेता बन गया। यह क्षेत्र लाखों लोगों को रोजगार देता है कसाई और व्यापारियों से लेकर

ट्रांसपोर्टर और छोटे किसान तक। आम धारणा के विपरीत, बीफ़ उद्योग पर मुसलमानों का वर्चस्व नहीं है। एलानासन्स, अल-कबीर और पीएमएल इंडस्ट्रीज जैसे प्रमुख निर्यातक गैर-मुसलमानों के स्वामित्व में या सह-स्वामित्व वाले हैं। यह व्यवसाय धर्मनिरपेक्ष है, जो मांग और व्यापार से प्रेरित है धर्म से नहीं।

स्वतंत्रता बनाम खाद्य पुलिसिंग : असली चिंता शाकाहार नहीं है, बल्कि भोजन के विकल्पों पर नैतिक रूप से नियंत्रण करने का प्रयास है। शाकाहार को राष्ट्रीय आदर्श के रूप में बढ़ावा देना और मांस खाने वालों को कलंकित करना बहिष्कार को बढ़ावा देता है, खास तौर पर अल्पसंख्यकों और हाशिए पर पड़े समूहों के खिलाफ। यह भारत की पाक विरासत को भी गलत तरीके से पेश करता है।

लोकतंत्र में भोजन व्यक्तिगत पसंद बना रहना चाहिए। कानून, सामाजिक दबाव या भीड़ हिंसा के माध्यम से एक आहार संहिता लागू करना स्वतंत्रता और बहुलवाद को कमजोर करता है। भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों और स्वादों का देश है। इसकी खान-पान की आदतें इस जटिलता को दर्शाती हैं। जबकि शाकाहार एक वैध और अक्सर महान जीवनशैली है, इसे नैतिक या सांस्कृतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। भोजन की राजनीति में आपसी सम्मान और सूचित विकल्प के लिए जगह होनी चाहिए।

पोषण असुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और असमानता से जूझ रही दुनिया में, लोगों के खाने से हटकर इस बात पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए कि भोजन कैसे उगाया जाता है, वितरित किया जाता है और उस तक कैसे पहुँचा जाता है। नैतिक, समावेशी और टिकाऊ प्रणालियाँ चाहे वे पौधे-आधारित हों या पशु-आधारित ही आगे बढ़ने का रास्ता हैं। आखिरकार, भोजन के विकल्पों का सम्मान करना लोगों का सम्मान करना है। और भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, यही एकमात्र टिकाऊ रास्ता है।

♦♦

धार्मिक आहार संबंधी नियम प्रायः लोकप्रिय धारणा से अधिक लचीले होते हैं। हिंदू धर्म में मांसाहार पर पूरी तरह प्रतिबंध नहीं है। प्राचीन ग्रंथों में मांसाहार और यहां तक कि पशु बलि का भी उल्लेख है। स्वामी विवेकानंद ने उल्लेख किया कि ऐतिहासिक रूप से, गोमांस का सेवन कुछ हिंदू संस्कारों का हिस्सा था। इस्लाम मांस की अनुमति देता है लेकिन नैतिक वध की आवश्यकता है। हलाल भोजन प्रथाओं में करुणा और अनुशासन पर जोर देता है। ईसाई धर्म में मांसाहार की अनुमति है, लेकिन अनुष्ठानिक बलि और पशुओं के उपचार के संबंध में नैतिक चेतावनियों हैं। बौद्ध धर्म में व्यापक भिन्नता है। जहां कुछ महामान संप्रदाय सख्त शाकाहार की वकालत करते हैं. वहीं कई थेरवाद और तिब्बती बौद्ध कुछ शर्तों के साथ मांस खाने की अनुमति देते हैं। सिख धर्म अनुष्ठानिक मांस (जैसे हलाल) को हतोत्साहित करता है। लेकिन व्यक्तिगत आहार संबंधी स्वतंत्रता की अनुमति देता है। जैन धर्म में अहिंसा पर आधारित सबसे सख्त नियम हैं। फिर भी यहाँ भी, कुछ अनुयायी मांस खाते हैं, जो सिद्धांत और दैनिक जीवन के बीच अंतर को दर्शाता है। ये उदाहरण दिखाते हैं कि धार्मिक भोजन के मानदंड एकसमान नहीं हैं। वे समय, क्षेत्र और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ के साथ विकसित होते हैं।

♦♦

ग्लोबल वार्मिंग

एशिया में दोगुनी गति से बढ़ते तापमान की स्थिति भयावह

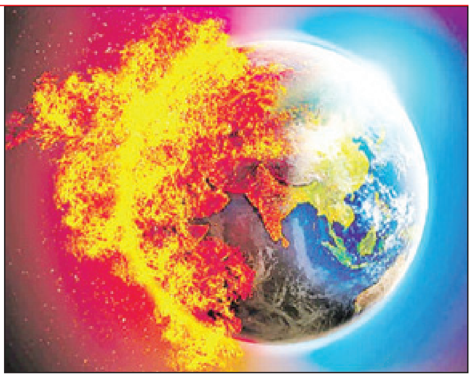

प्रशांत गौतम

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) की हालिया रिपोर्ट ने एशिया में तेजी से बदलते जलवायु परिदृश्य को लेकर एक गंभीर चेतावनी दी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि एशिया में तापमान वृद्धि की दर 1991 से 2024 के बीच वैश्विक औसत की तुलना में लगभग दोगुनी रही है, जो आने वाले समय में न केवल इस क्षेत्र की आर्थिक और पारिस्थितिकीय स्थिरता को चुनौती देगा, बल्कि मानव जीवन के लिए भी घातक साबित हो सकता है।

WMO की 'एशिया में जलवायु की स्थिति' रिपोर्ट के अनुसार, 2024 अब तक रिकॉर्ड में सबसे गर्म या दूसरा सबसे गर्म वर्ष रहा है, जिसमें औसतन तापमान 1991-2020 के औसत से 1.04 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। इस दौरान लंबी अवधि की गर्मी की लहरों, भीषण सूखा, भारी वर्षा, और अकाल जैसे हालातों ने जन जीवन और पर्यावरण दोनों को प्रभावित किया। भारत में भी इन चरम मौसम घटनाओं का गहरा प्रभाव देखा गया। केरल के वायनाड जिले में भारी वर्षा के कारण हुए भूस्खलनों में 350 से अधिक लोगों की जान चली गई। वहीं, वर्ष 2023 में देश भर में आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं में लगभग 1,300 लोगों की मृत्यु दर्ज की गई। 2024 में गर्मी की तीव्र लहरों के कारण 450 से अधिक लोगों की जान चली गई। इन आंकड़ों से साफ है कि अब चरम मौसम की घटनाएं कोई 60, 50, 40, -10, 30, °C 50 40 30 20 10.

अपवाद नहीं, बल्कि एक नई सामान्य स्थिति बनती जा रही हैं। WMO की रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि उच्च पर्वतीय एशिया हिमालय क्षेत्र में 24 में से 23 ग्लेशियरों का द्रव्यमान लगातार विशेषकर हिंदू कुश घट रहा है। मध्य हिमालय (नेपाल, तिब्बत, और भारत के सिक्किम क्षेत्र) और तियान शान पर्वत श्रृंखला (चीन, किर्गिस्तान,कजाकिस्तान) में सर्दियों की बर्फबारी में गिरावट और गर्मियों में अत्यधिक गर्मी के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं।

यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है, क्योंकि इसी क्षेत्र से एशिया की दस प्रमुख नदियाँ, जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिंधु आदि Originate होती हैं। इन नदियों पर अरबों लोगों की जल ज़रूरतें निर्भर हैं। यदि यह पिघलाव इसी तरह जारी रहा तो भविष्य में भयानक जल संकट की स्थिति बन सकती है।

रिपोर्ट में यह भी उजागर किया गया है कि 2024 में एशिया का अधिकांश समुद्री क्षेत्र गंभीर और तीव्र समुद्री गर्मी की लहरों से प्रभावित हुआ- 1993 के बाद से यह सबसे व्यापक समुद्री गर्मी की स्थिति रही है। समुद्री पारिस्थितिकी तंत्रों, जैसे कोरल रीफ, मछली उत्पादन, और समुद्री जैव विविधता पर इसका अत्यंत नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

जलवायु संकट से निपटने के उपाय : हम क्या कर सकते हैं?

विश्व पर्यावरण दिवस जैसे अवसरों पर यह समझना जरूरी है कि जलवायु परिवर्तन कोई दूर की समस्या नहीं, बल्कि आज की सबसे गंभीर सच्चाई है। अगर हम आज कदम नहीं उठाते, तो कल बहुत देर हो जाएगी। आइए जानें कि हम व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या कर सकते है-

- **हरियाली बढ़ाएं :** अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। वृक्ष न केवल तापमान नियंत्रित करते हैं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध एक प्रभावी रक्षा कवच हैं।
- **करें:** प्लास्टिक का प्रयोग कम सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर्यावरण का सबसे बड़ा दुश्मन बन चुका है। इसके स्थान पर जूट, कपड़े और बायोडिग्रेडेबल विकल्पों को अपनाएं।
- **ऊर्जा संरक्षण करें :**घरों में LED बल्ब का उपयोग करें, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को सावधानी से इस्तेमाल करें। एशिया में तापमान वृद्धि की रफ्तार वैश्विक औसत से दोगुनी हो चुकी है। WMO की हालिया रिपार्ट बताती है कि चरम मौसम की घटनाएं अब नई सामान्य स्थिति बन रही है। हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने से अरबों लोगों के लिए जल संकट गहरा सकता है। जलवायु संकट से निपटने के लिए अब तत्काल कदम उठाना अनिवार्य है।

बेवजह चालू न रखें और सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दें।

- **प्राकृतिक जल स्रोतों की रक्षा करें:** नदियों, तालाबों और झीलों को प्रदूषित न करें। जल संरक्षण को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं।
- सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें- वाहन प्रदूषण को कम करने के लिए साइकिल, पैदल चलना या सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें।
- **पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा दें :** बच्चों और युवाओं में जलवायु जागरूकता पैदा करें। स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय विषयों को गंभीरता से पढ़ाया जाना चाहिए।

WMO की रिपोर्ट केवल आंकड़ों का विश्लेषण नहीं, बल्कि एक गंभीर चेतावनी है। यदि हमने अभी से जागरूकता नहीं दिखाई, तो आने वाले वर्षों में हालात और बदतर हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन से लड़ाई केवल सरकारों की नहीं, बल्कि हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

आइए हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम न केवल अपने जीवन को पर्यावरण के अनुकूल बनाएंगे, बल्कि अपने आस-पास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। यही एकमात्र रास्ता है जिससे हम आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण दे सकते हैं।

आर्थिक उन्नति

निर्धन भारत में बढ़ती अमीरों की संख्या

शेख सलीम

भाजपा शासन में, भारत न केवल बढ़ती नफरत और मुस्लिम विरोधी भावना के मामले में बल्कि अपने आर्थिक परिदृश्य में भी तेजी से बदल रहा है। लग्जरी बाजार तेजी से बढ़ रहा है और भारत में अन्य देशों की तुलना में अत्यधिक अमीर व्यक्तियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। मैकिन्से एंड कंपनी की रिपोर्ट में भविष्यवाणी की गई है कि 2028 तक भारत में 30 मिलियन डॉलर (लगभग 250 करोड़) या उससे अधिक की कुल संपत्ति वाले व्यक्तियों की संख्या में 50 पतिशत की वृद्धि होगी। अकेले भारत के लग्जरी बाजार में 2025 में 15-20% की वृद्धि होने की उम्मीद है।

लुई वीटॉन, गुच्ची और रोल्स रॉयस जैसे प्रतिष्ठित वैश्विक ब्रांड मुंबई और दिल्ली जैसे शहरों में शोरूम खोल रहे हैं। अति-धनवान लोगों के लिए विशेष मॉल और गेटेड कॉलोनियों बनाई जा रही हैं। हाल ही में, लोग लग्जरी शॉपिंग के लिए दुबई या सिंगापुर जाते थे। लेकिन अब महंगे सामान ऑनलाइन उपलब्ध हैं, यहाँ तक कि छोटे भारतीय शहरों में भी। महंगी घड़ियों, डिजाइनर कपड़ों, निजी जेट और लग्जरी छुट्टियों की मांग बढ़ रही है। एक नया 'सुपर रिच' वर्ग फ्लिपकार्ट, जोमैटो, पेटीएम आदि के उभरते स्टार्टअप संस्थापक हैं, जिन्हें निवेशकों के समर्थन और 'स्टार्टअप इंडिया जैसी सरकारी नीतियों से लाभ हुआ है।' इन्हें मेक इन इंडिया जैसे नारों के तहत राष्ट्रीय सफलता के रूप में पेश किया जाता है। लेकिन इस चमकदार छवि के पीछे एक कड़वी सच्चाई छिपी है जिसका सामना लाखों आम भारतीय रोजाना करते हैं।

जबकि अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और मध्यम वर्ग के लोग मुश्किलों में डूबते जा रहे हैं। लाखों शिक्षित युवाओं को स्थिर, अच्छे वेतन वाली नौकरियाँ नहीं मिल पा रही हैं। स्थायी रोजगार गायब हो रहे हैं। किसान कर्ज के बोझ तले दबे हुए हैं और कई राज्यों में किसानों की आत्महत्याएँ चिंताजनक रूप से लगातार हो रही हैं। छोटे दुकानदार और स्थानीय व्यवसाय, जो कभी भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे, अब मुद्रास्फीति, कॉर्पोरेट प्रतिस्पर्धा और घटती उपभोक्ता मांग से जूझ रहे हैं।

विलासिता क्षेत्र चमकता है, फिर भी 800 मिलियन से अधिक भारतीय सरकारी सब्सिडी वाले खाद्यान्न पर निर्भर हैं, चावल, गेहूं और तेल जैसी बुनियादी खाद्यान्न सामग्री राज्य के समर्थन के बिना उनकी पहुंच से बाहर है। साथ ही, सरकार बड़ी कंपनियों को कर कटौती, ऋण माफी, भूमि तक पहुंच और बहुत कुछ जैसे भारी लाभदेती है।

यह आकस्मिक नहीं है, बल्कि सोची-समझी नीति निर्माण का नतीजा है। मोदी के 2014 में सत्ता में आने के बाद से, आर्थिक नीतियों ने मुट्ठी भर बड़े उद्योगपतियों का पक्ष लिया है। सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइ ?यों को बेचा जा रहा है, श्रम कानूनों को कमजोर किया जा रहा है, और कल्याणकारी राज्य सिकुड़ रहा है। क्रोनी कैपिटलिज्म एक आदर्श बन रहा है, जो धन और शक्ति के बीच एक तंग शोषण करता है। गठबंधन है जो आम नागरिक का भारत के प्रमुख शहरों में यह असमानता साफ दिखाई देती है। मुंबई और दिल्ली जैसी जगहों पर, अमीर और गरीब पूरी तरह से अलग-अलग वास्तविकताओं में रहते हैं। समृद्ध पड़ोस साफ-सुधरे और सुव्यवस्थित हैं, जहाँ प्रतिदिन कई बार सफाई होती है, कर्मचारियों की संख्या अधिक होती है. बिजली की निर्बाध आपूर्ति होती है और स्वच्छ पानी की सुविधा होती है। इसके विपरीत, गरीब इलाकों में गंदगी, उपेक्षा,

♦♦

विलासिता क्षेत्र चमकता है, फिर भी 800 मिलियन से अधिक भारतीय सरकारी सब्सिडी वाले खाद्यान्न पर निर्भर हैं, चावल, गेहूं और तेल जैसी बुनियादी खाद्यान्न सामग्री राज्य के समर्थन के बिना उनकी पहुंच से बाहर है। साथ ही, सरकार बड़ी कंपनियों को कर कटौती, ऋण माफी, भूमि तक पहुंच और बहुत कुछ जैसे भारी लाभदेती है। यह आकस्मिक नहीं है, बल्कि सोची-समझी नीति निर्माण का नतीजा है। मोदी के 2014 में सत्ता में आने के बाद से, आर्थिक नीतियों ने मुट्ठी भर बड़े उद्योगपतियों का पक्ष लिया है। सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइ ?यों को बेचा जा रहा है, श्रम कानूनों को कमजोर किया जा रहा है, और कल्याणकारी राज्य सिकुड़ रहा है। क्रोनी कैपिटलिज्म एक आदर्श बन रहा है, जो धन और शक्ति के बीच एक तंग शोषण करता है। गठबंधन है जो आम नागरिक का भारत के प्रमुख शहरों में यह असमानता साफ दिखाई देती है। मुंबई और दिल्ली जैसी जगहों पर, अमीर और गरीब पूरी तरह से अलग-अलग वास्तविकताओं में रहते हैं। समृद्ध पड़ोस साफ-सुधरे और सुव्यवस्थित हैं, जहाँ प्रतिदिन कई बार सफाई होती है, कर्मचारियों की संख्या अधिक होती है. बिजली की निर्बाध आपूर्ति होती है और स्वच्छ पानी की सुविधा होती है।

♦♦

बिजली कटौती और बुनियादी सेवाओं की कमी होती है। यह अंतर अब केवल आर्थिक नहीं है, यह सामाजिक और भौगोलिक हो गया है। आज, भारत में असमानता आधुनिक इतिहास में अभूतपूर्व स्तर पर पहुँच गई है। अरबपतियों की संख्या बढ़ रही है, जबकि लाखों लोग गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी से पीड़ित हैं। महाराष्ट्र में एक किसान की आत्महत्या पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है, जबकि एक व्यवसायी का नया उद्यम सुर्खियों में रहता है। बिहार में एक बेरोजगार युवक राष्ट्रीय मीडिया के लिए अदृश्य है, लेकिन बॉलीवुड अभिनेता का नया घर प्राइम-टाइम समाचार बन जाता है। यह केवल वित्तीय विभाजन नहीं है, यह एक नैतिक और प्रतिनिधित्वात्मक विभाजन है, किसका जीवन मायने रखता है?

स्थिति को और भी बदतर बनाने वाली भूमिका मुख्यधारा के मीडिया की है, जिसे अक्सर 'गोदी मीडिया' कहा जाता है। इसने आम आदमी को प्रभावित करने वाले सभी मुद्दों को छोड़ दिया है। प्राइम टाइम टीवी बहसें नफरत भरे भाषण, धार्मिक ध्रुवीकरण और सरकार की चापलूसी भरी प्रशंसा से भरी हुई हैं। मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, किसानों की परेशानी और आर्थिक असमानता जैसी वास्तविक चिंताओं को या तो नजरअंदाज कर दिया जाता है या उनका मजाक उड़ाया जाता है। हां, भारत की लक्जरी अर्थव्यवस्था का उदय वास्तविक है। यह वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की भारत की क्षमता को दर्शाता है। लेकिन यह कहानी का केवल एक पक्ष है। पूरी तस्वीर में कुपोषित बच्चे, उदास युवा और कर्ज में डूबे परिवार भी शामिल हैं। किसी देश की प्रगति को उसके अरबपतियों की संख्या से नहीं, बल्कि उसके सबसे गरीब नागरिक की भलाई से मापा जाना चाहिए।

आज भारत एक चौराहे पर खड़ा है। क्या हम उस रास्ते पर चलते रहेंगे जो सिर्फ मुट्ठी भर उद्योगपतियों को फ़ायदा पहुँचाता है या फिर हम ऐसा रास्ता चुनेंगे जो सभी के लिए सम्मान, अवसर और समान विकास प्रदान करता है? अगर मौजूदा नीतियों ठाकतवरों के पक्ष में झुकी रहीं, तो मुंबई और दिल्ली के आलीशान मॉल एक दिन सभी के लिए न्याय और समानता के टूटे हुए वादे के प्रतीक बन जाएँगे। यह असमानता भारत के सबसे गरीब राज्यों में सबसे ज्यादा है। 8.5 लाख करोड़ (.102 बिलियन) के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (त्रस्छक्क) वाले बिहार की वार्षिक प्रति व्यक्ति आय सिर्फ 59,000 रुपये है। भारत के सबसे ज्यादा आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश की GSDP 23.5 लाख करोड़ (.282 बिलियन) है, लेकिन इसकी प्रति व्यक्ति आय सिर्फ 80,000 रुपये है, जो दोनों ही राष्ट्रीय औसत से काफ़ी कम है।

ये आंकड़े भारत के विकास में गंभीर क्षेत्रीय असंतुलन को उजागर करते हैं। जब तक इसमें सुधार नहीं होता, भारत के विकास को समावेशी नहीं कहा जा सकता। अगर इन मुद्दों पर 'गोदी मीडिया' द्वारा गंभीरता से चर्चा की जाती, तो राष्ट्रीय विमर्श कितना बेहतर होता। दुर्भाग्य से, ऐसा नहीं है। आइए आशा करें कि एक दिन, इस देश में अमीरी और गरीबी पर एक वास्तविक बहस केंद्र में होगी।

आज, भारत में असमानता आधुनिक इतिहास में अभूतपूर्व स्तर पर पहुँच गई है। अरबपतियों की संख्या बढ़ रही है, जबकि लाखों लोग गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी से पीड़ित हैं।

महाराष्ट्र में एक किसान की आत्महत्या पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है, जबकि एक व्यवसायी का नया उद्यम सुर्खियों में रहता है। बिहार में एक बेरोजगार युवक राष्ट्रीय मीडिया के लिए अदृश्य है, लेकिन बॉलीवुड अभिनेता का नया घर प्राइम-टाइम समाचार बन जाता है।

यह केवल वित्तीय विभाजन नहीं है, यह एक नैतिक और प्रतिनिधित्वात्मक विभाजन है, किसका जीवन मायने रखता है?

आईएसओ प्रमाणन : गरीब उपभोक्ताओं के साथ धोखा

अनिल जौहरी

जब में हवाई मार्ग से भारत यात्रा करता हूं तो मुझे विभिन्न प्रकार के स्नेक्स और पेय पदार्थ परोसे जाते हैं। कई बार मैं देखता हूँ कि उनके लेबल पर 'आईएसओ 9001 प्रमाणित कंपनी' या 'आईएसओ 22000 प्रमाणित कंपनी या 'एचएसीसीपी प्रमाणित कंपनी' जैसे दावे लिखे होते हैं। दुर्भाग्यवश, खाद्य व्यवसायों द्वारा यह गलत बयानी अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का उल्लंघन है। आइये जानते हैं कि ISO 9001 या ISO 22000 या HACCP क्या हैं।

ISO 9001 जिनेवा स्थित अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (ISO) द्वारा प्रकाशित एक विश्व स्तर पर लोकप्रिय मानक है, जिसमें भारत का भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) भी सदस्य है। यह मानक किसी संगठन के भीतर गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली या QMS को लागू करने के लिए आवश्यकताओं को निर्धारित करता है। संगठन के भीतर गुणवत्ता के प्रबंधन के लिए एक प्रणाली चाहे वह उत्पाद हो या सेवा। उम्मीद करनी चाहिए कि ऐसा प्रमाणित संगठन एक अच्छी गुणवत्ता वाला उत्पाद प्रदान करें।

ISO 22000 ISO 22000 150 22000 : यह प्रमाणन उत्पाद की गुणवत्ता को प्रमाणित नहीं करता है। उदाहरण के लिए, जब आप इलेक्ट्रिक

आयरन या मिक्सर पर ISI चिह्न देखते हैं, तो यह इंगित करता है कि उत्पाद एक स्वतंत्र निकाय द्वारा प्रमाणित है, इस मामले में BISI इसी तरह, ISO 22000 खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली के बारे में है और जैसा कि इसका तात्पर्य है, खाद्य व्यवसाय ने खाद्य सुरक्षा का प्रबंधन करने के लिए एक प्रणाली लागू की है। उत्पाद की गुणवत्ता या सुरक्षा को प्रमाणित नहीं करना।

HACCP का मतलब है खतरा विश्लेषण महत्वपूर्ण नियंत्रण बिंदु-उत्पादन इकाई के भीतर खाद्य सुरक्षा जोखिमों का प्रबंधन करने की एक पद्धति। फिर से, किसी प्रकार की एक प्रणाली या प्रक्रिया। उत्पाद की गुणवत्ता या सुरक्षा को सटीक रूप से प्रमाणित नहीं करना

यह स्वीकार करते हुए कि उत्पाद या उत्पाद लेबलिंग पर ऐसे प्रमाणन के किसी कथन का प्रयोग आम आदमी को यह मानने में गुमराह कर सकता है कि उत्पाद स्वयं प्रमाणित है. प्रमाणन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानदंड (खाद्य उत्पादों के लिए आईएसओ १७०२१-१ और आईएसओ २२००३ के साथ पढ़ा जाए) खाद्य के मामले में उत्पाद या उसके लेबलिंग पर ऐसे

पुराना बनाम नया : कांग्रेस के नेताओं की दुविधाएं

डॉ. सतीश मिश्रा

एक वरिष्ठ पत्रकारों के समूह में, जिसका मैं सदस्य हूं, मैंने अपने एक साथी द्वारा लिखे गए लेख को पढ़ा। यह लेख हाल ही में अहमदाबाद में आयोजित कांग्रेस के एआईसीसी अधिवेशन पर था। वह पत्रकार कई वर्षों तक कांग्रेस की रिपोर्टिंग करते रहे हैं, जबकि मैंने कांग्रेस की रिपोर्टिंग 1988 तक की थी, उसके बाद मुझे बीजेपी को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई, जिसे मैंने 2008 तक नियमित रूप से निभाया। हालांकि 1995-96 के दौरान मैंने फिर से कांग्रेस को कवर किया था।

अब बात उस लेख की जिसने मुझे फिर से कांग्रेस पर लिखने के लिए प्रेरित किया। उस लेख में कांग्रेस की हाल की स्थिति को काफी निराशाजनक रूप में पेश किया गया है। यह लेख 'बना दिशा की कांग्रेस डगमगाती हुई' शीर्षक से छपा है और इसकी शुरुआत कुछ इस तरह होती है-

'कांग्रेस दिशाहीन नजर आती है, जैसा कि हाल ही में अहमदाबाद में आयोजित एक दिवसीय अधिवेशन से स्पष्ट होता है। इसके नेता बार-बार वही बातें दोहराते हैं, कोई ठोस सुधार नजर नहीं आता और वे अपनी पिछली गलतियों से कुछ सीखने को तैयार नहीं हैं।

मैं उनके लेख के कुछ महत्वपूर्ण अंशों को उद्धृत कर रहा हूँ ताकि आप समझ सकें कि उन्होंने कांग्रेस की वर्तमान स्थिति को कैसे देखा है-

उच्च नेतृत्व जमीनी हकीकत से अनजान है और न तो कोई तैयारी दिखती है, न ही कोई रणनीति। पार्टी का ढांचा शीर्ष-प्रधान है और एआईसीसी में सौ से अधिक सचिव हैं, जिनमें से अधिकांश एक-दूसरे को पहचानते तक नहीं और अधिकतर का पार्टी कार्यकर्ताओं से कोई संपर्क नहीं है।

कार्यसमिति में ऐसे सदस्य हैं जो न तो पार्टी की प्रगति में कोई नया योगदान दे सकते हैं, न ही कोई दिशा दे सकते हैं। वे सिर्फ इसलिए हैं क्योंकि वे सत्ता में बैठे लोगों के करीबी हैं।

'सच तो यह है कि इस समय कांग्रेस की न तो बीजेपी से मुकाबला करने की क्षमता है और न ही अपने सहयोगियों से अच्छे संबंध बनाए रखने की।'

'क्या पार्टी का संचार विभाग अपनी पूरी क्षमता से काम कर रहा है? प्रवक्ताओं का चयन किसने किया है, जो कई बार पार्टी की छवि खराब करते हैं बजाय इसके कि बीजेपी के आरोपों का प्रभावी जवाब दें?'

'मल्लिकार्जुन खड़गे पार्टी अध्यक्ष हैं और वर्तमान राजनीति की समझ रखते हैं। लेकिन यह धारणा बन गई है, चाहे वह सही हो या गलत, कि उनके पास पार्टी के रोजमर्रा के मामलों में कोई खास भूमिका नहीं है। सब कुछ गांधी परिवार के नियंत्रण में है। गांधी परिवार का पार्टी पर पूर्ण नियंत्रण है और यह कल्पना करना भी कठिन है कि कांग्रेस का नेतृत्व उनसे अलग हो सकता है।'

'दुविधा यह है कि या तो गांधी पूरी तरह कमान संभालें या फिर खड़गे को पूरी स्वतंत्रता से काम करने दें।'

'क्या पार्टी में उभरे हुए युवा नेताओं को ज्यादा महत्व नहीं मिलना चाहिए? मनीष तिवारी और शशि थरूर जैसे नेताओं को उनका हक क्यों नहीं दिया जा रहा? क्या पार्टी को अपने मूल विचारों से चलना चाहिए या वामपंथी सोच वाले नेताओं के इशारों पर?'

ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस किसी चमत्कार की प्रतीक्षा कर रही है। वह चमत्कार यह है कि जनता मौजूदा सरकार से ऊब जाए और कांग्रेस को विकल्प के रूप में सत्ता में ला दे। इससे अधिक हास्यास्पद कुछ नहीं हो सकता।

पूरा लेख पढ़ने के बाद मुझे कुछ समय के लिए निराशा घेर गई क्योंकि मेरी राय उनसे बिल्कुल अलग है। हालांकि न वे अहमदाबाद में थे और न मैं, फिर भी हमारी समझ मीडिया रिपोर्टों, अंदरूनी सूत्रों से बातचीत या नेताओं से हुई अनौपचारिक चर्चाओं पर आधारित है।

मेरे विचार से, गुजरात में एआईसीसी अधिवेशन का आयोजन करके कांग्रेस ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि वह बीजेपी के गढ़ में भी सीधा मुकाबला करने को तैयार है। अगर अधिवेशन बिहार में होता, जहाँ कनहैया कुमार ने हाल ही में जन समर्थन जुटाने के लिए यात्रा की थी, तो यह सहयोगी दलों को गलत संदेश देता, क्योंकि वहाँ कांग्रेस अकेले नहीं बल्कि इंडिया गठबंधन के साथ चुनाव लड़ेगी।

2024 के लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन ने बीजेपी को कड़ी टक्कर दी, जबकि कांग्रेस ने अभी अपने जिला संगठनों को मजबूत करने की योजना ही शुरू की है। ऐसी स्थिति में परिणाम का इंतजार किए बिना ही विफलता घोषित करना जल्दबाजी होगी।

रही बात मनीष तिवारी या शशि थरूर को जिम्मेदारी देने की, तो यह नेतृत्व का विशेषाधिकार है। लेकिन क्या इन दोनों नेताओं को पार्टी ने पहले कुछ नहीं दिया? क्या वे बिना किसी अपेक्षा के पार्टी को मजबूत करने के लिए काम नहीं कर सकते?

आज के समय में पहले से स्थापित नेताओं के लिए ज्यादा जरूरी क्या है—पार्टी में महत्व पाना या देश, जनता, सामाजिक सौहार्द और नफरत की राजनीति को रोकना?

खड़गे और गांधी परिवार के नेतृत्व में पहली बार कांग्रेस यह स्पष्ट रूप से कह रही है कि आरएसएस-बीजेपी उसकी वैचारिक प्रतिद्वंदी है। इसमें अब कोई भ्रम नहीं बचा है। मेरे ईमानदार मूल्यांकन में, जैसे बीजेपी आरएसएस के बिना अधूरी है, वैसे ही कांग्रेस को गांधी परिवार के बिना कल्पना करना मुश्किल है। अब निर्णय आपके हाथ में है।

(लेखक मीडिया मैप के संयुक्त संपादक हैं)

आखिर क्यों बढ़ रही हैं विमान दुर्घटनाएं

प्रभजोत सिंह

हवाई आपदाएं अत्यंत विनाशकारी होती एक आपदा एक अलग ही भयावह कहानी पेश करती है, जो पीड़ितों, विमानन विशेषज्ञों और आम जनता को यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या इसे रोका जा सकता था? अगर हां, तो फिर रोका क्यों नहीं गया? तथ्यान्वेषण मिशन या जांच समितियां अक्सर मानवीय, यांत्रिक या प्राकृतिक त्रुटियों से हुई भयावह त्रासदियों के प्रभाव और गंभीरता को कम करके पेश करने का एक परोक्ष तरीका बन जाती हैं।

मेरे पचास वर्षों के पत्रकारिता करियर में, मैंने कुछ ऐसी हवाई आपदाओं को देखा है जिन्होंने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया। 23 जून 1985 को एयर इंडिया के बोइंग 747-237 विमान 'कनिष्क' में बम विस्फोट हुआ था, जो शायद एकल विमान से जुड़ी अब तक की सबसे बड़ी और भयावह आपदा थी। इस दुर्भाग्यपूर्ण विमान में सवार सभी 307 यात्री और 22 चालकदल के सदस्य मारे गए जब यह विमान बीच आसमान से दुर्घटनाग्रस्त होकर गिर पड़ा। एक और विनाशकारी दुर्घटना 12 नवंबर 1996 को हुई, जब सऊदी फ्लाइट 763 का बोइंग 747 विमान और कजाखस्तान फ्लाइट 1907 का इल्यूशिन IL-76 विमान दिल्ली के पास चरखी दादरी के ऊपर हवा में टकरा गए, जिससे 349 लोगों की मौत हो गई।

जब पूरी दुनिया कनिष्क विस्फोट की 40वीं बरसी पर शोक मना रही थी, उसी समय एक और त्रासदी घट रही थी। एयर इंडिया की फ्लाइट (AI 171), जिसमें चालक दल सहित 242 लोग सवार थे, अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ ही मिनट बाद एक मेडिकल कॉलेज के छात्रावास पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। सिर्फ एक यात्री चमत्कारी रूप से बच पाया। यह बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान 39 और लोगों की जान भी ले गया।

इन तीन बड़ी हवाई आपदाओं के अलावा, मैं नवंबर 1996 में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय हवाई आपदा संगोष्ठी से भी जुड़ा रहा। उत्तर भारत के प्रमुख समाचार पत्र द ट्रिब्यून ने इस संगोष्ठी पर मेरी प्रमुख रिपोर्ट प्रकाशित की थी।

एयर कोमोडोर जे. एस. कालरा और पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज के नागरिक उड्डयन विभाग के प्रोफेसर डी. के. शर्मा के नेतृत्व में आयोजित इस संगोष्ठी में कई शीर्ष नागरिक और सैन्य विमानन विशेषज्ञों ने भाग लिया था और गहन विचार-विमर्श किया गया था। हैरानी की बात है कि 29 वर्ष पहले इस संगोष्ठी में निकाले गए निष्कर्ष आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

अहमदाबाद दुर्घटना के बाद विशेषज्ञों की राय इस पर बंटी हुई है कि इस दुर्घटना का कारण क्या हो सकता है। विमान का 'ब्लैक बॉक्स', जिसे सब कछ जानने वाला या जादुई डिब्बा माना जाता है, सच को जानने के लिए अमेरिका भेजा गया है। डबल इंजन फेल्योर' की संभावना को देखते हुए यह माना जा रहा है कि बोइंग ड्रीमलाइनर की 10 वर्षों से अधिक की सेवाओं में यह पहला बड़ा हादसा है, जिससे विमानन उद्योग इस सिद्धांत को आसानी से स्वीकार नहीं कर रहा।

जैसे-जैसे विमानों की दुर्घटनाओं के कारणों और नागरिक उड्डयन की विश्वसनीयता को लेकर बहस चल रही है, एयर इंडिया के CEO और MD, कैंपबेल विल्सन ने महाराजा क्लब के सभी सदस्यों को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने कहा- हम भारी मन से आपसे संपर्क कर रहे हैं, एयर इंडिया फ्लाइट 1171 की 12 जून 2025 को हुई दुखद दुर्घटना के बाद।

इस त्रासदी 241 यात्री और चालक दल के में सदस्य, साथ ही जमीन पर 34 लोगों की मौत ने हम सभी को गहरे शोक में डाल दिया है। हम प्रभावित थी। परिवारों और प्रियजनों के लिए जो दुख महसूस करते हैं, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। हम पूरी तरह से समर्पित हैं कि प्रभावित परिवारों की हर संभव सहायता करें और दुर्घटना के कारणों को समझने के लिए अधिकारियों के साथ मिलकर काम करें।

एयर इंडिया में आपकी सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और 2022 में एयरलाइन के अधिग्रहण के बाद से यह हमारी प्राथमिकता रही है। इस संदर्भ में हम फ्लाइट 1171 से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी साझा करना चाहते हैं- हमारे पायलट: कैप्टन सुमीत सभरवाल, जो 10,000 से अधिक घंटे चौड़े शरीर वाले विमान उड़ाने का अनुभव रखते थे, और फर्स्ट ऑफिसर क्लाइव कुंदर के पास 3,400 घंटे से अधिक का उड़ान अनुभव था। विमान का अंतिम प्रमुख निरीक्षण जून 2023 में हुआ था और अगला निरीक्षण दिसंबर 2025 के लिए निर्धारित था। दाएं इंजन की मरम्मत मार्च 2025 में की गई थी और बाएं इंजन की अप्रैल 2025 में जांच हुई थी। उड़ान से पहले कोई समस्या दर्ज नहीं की गई। हमारे 33 बोइंग 787 विमानों पर डीजीसीए के निर्देशानुसार 14 जून 2025 से सुरक्षा जांच की जा रही है। अब तक 26 विमानों की जांच हो चुकी है और सेवा के लिए मंजूरी दी गई है। शेष विमानों की जांच नियोजित मरम्मत के दौरान की जाएगी।

हमने बोइंग 777 विमानों पर भी अतिरिक्त सुरक्षा जांच लागू करने का निर्णय लिया है। इन अतिरिक्त जाँचों और बाहरीकारकों (जैसे ईरान और मध्य पूर्व में एयरस्पेस बंद होना, कुछ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर रात की उड़ानों पर प्रतिबंध आदि) के चलते लंबी दूरी की उड़ानों में ज्यादा रद्दीकरण हुआ है। हम 20 जून 2025 से जुलाई के मध्य तक अंतरराष्ट्रीय चौड़े शारीर वाले विमानों की उड़ानों में लगभग 15 प्रतिशत की कटौती करेंगे, ताकि अतिरिक्त विमानों को बैकअप के रूप में तैयार रखा जा सके।

आपकी यात्रा योजनाएं प्रभावित होने पर हम आपसे संपर्क करेंगे और बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के पुन: बुकिंग या पूर्ण रिफंड का विकल्प देंगे। हम आपके धैर्य और समर्थन के लिए आभारी हैं। किसी भी प्रश्न के लिए कृपया हमारे कस्टमर सपोर्ट से संपर्क करें।

कब 'ऑरेंज' होता है 'ब्लैक?' जब 23 जून 1985 को एयर इंडिया की फ्लाइट UAI-182 (टोरंटो-दिल्ली) में बम धमाका हुआ था, तब खबर एजेंसियों ने ब्लैक बॉक्स को लेकर रिपोर्टिंग शुरू की थी। उस समय बहुत कम लोग जानते थे कि ब्लैक बॉक्स क्या होता है। यह एक ऐसा यंत्र है जो न केवल बीच की हर बात को भी दर्ज करता है। पायलट और ATC के बातचीत रिकॉर्ड करता है, बल्कि कॉकपिट में पायलटों के बीच हुई उस समय सोशल मीडिया या गूगल जैसे साधन उपलब्ध नहीं थे। मुझे याद है कि देर शाम हमारे प्रधान संपादक श्री प्रेम भाटिया न्यूज रूम में आए और पूछा- क्या किसी को इस डिवाइस के बारे में जानकारी है? मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास बोइंग कंपनी की एक नई किताब है जिसमें इसके बारे में जानकारी है।

मैंने आधे घंटे के भीतर वापस आकर उन्हें बताया कि ब्लैक बॉक्स वास्तव में नारंगी रंग का होता है ताकि मलबे में इसे आसानी से पहचाना जा सके। यह दो यंत्रों से बना होता है- फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर (FDR) और कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर (CVR)। यह विमान के पिछले हिस्से में स्थित होता है, जो अक्सर दुर्घटना में सबसे सुरक्षित हिस्सा होता है।

अहमदाबाद हादसे के बाद एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (AAIB) ने मलबे से ब्लैक बॉक्स बरामद किया। विमान के पूरी तरह ईंधन से भरे टैंकों में हुए विस्फोट से बाकी विमान मलबे में तब्दील हो गया था। केवल पूंछ का हिस्सा ही सही सलामत रहा। अब अमेरिकी राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड (NTSB) और संघीय विमानन प्रशासन (ख्न) की एक टीम, AAIB को जांच में सहायता करेगी। यह बोइंग 787 विमान से जुड़ा पहला बड़ा हादसा है।

इस त्रासदी के बाद कई यात्रियों ने दिल्ली से अहमदाबाद की पूर्व उड़ान में विमान की खराब स्थिति की शिकायतें की थीं जैसे कि एयर कंडीशनिंग का काम न करना, टूटी-फूटी सीटें आदि। टाटा के अधीन एयर इंडिया प्रबंधन ने कुछ प्रमुख मार्गों पर नए विमान तैनात किए थे, लेकिन कुछ गंतव्यों जैसे टोरंटो पर पुराने और समस्याग्रस्त विमान ही चलते रहे। मुझे स्वयं दो बार ऐसे विमानों में यात्रा करने का अनुभव हुआ है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

♦ ♦

एयर कोमोडोर जे. एस. कालरा और पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज के नागरिक उड्डयन विभाग के प्रोफेसर डी. के. शर्मा के नेतृत्व में आयोजित इस संगोष्ठी में कई शीर्ष नागरिक और सैन्य विमानन विशेषज्ञों ने भाग लिया था और गहन विचार-विमर्श किया गया था। हैरानी की बात है कि 29 वर्ष पहले इस संगोष्ठी में निकाले गए निष्कर्ष आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

अहमदाबाद दुर्घटना के बाद विशेषज्ञों की राय इस पर बंटी हुई है कि इस दुर्घटना का कारण क्या हो सकता है। विमान का 'ब्लैक बॉक्स', जिसे सब कछ जानने वाला या जादुई डिब्बा माना जाता है, सच को जानने के लिए अमेरिका भेजा गया है। डबल इंजन फेल्योर' की संभावना को देखते हुए यह माना जा रहा है कि बोइंग ड्रीमलाइनर की 10 वर्षों से अधिक की सेवाओं में यह पहला बड़ा हादसा है, जिससे विमानन उद्योग इस सिद्धांत को आसानी से स्वीकार नहीं कर रहा।

जैसे-जैसे विमानों की दुर्घटनाओं के कारणों और नागरिक उड्डयन की विश्वसनीयता को लेकर बहस चल रही है, एयर इंडिया के CEO और MD, कैंपबेल विल्सन ने महाराजा क्लब के सभी सदस्यों को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने कहा- हम भारी मन से आपसे संपर्क कर रहे हैं, एयर इंडिया फ्लाइट 1171 की 12 जून 2025 को हुई दुखद दुर्घटना के बाद।

♦ ♦

गोदी मीडिया का वाशिंगटन पोस्ट ने किया 'पोस्टमार्टम'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत में भी बी.बी.सी, गार्जियन ,सी.एन.एन, वाशिंगटन पोस्ट और अल-जज़ीरा जैसे लोकप्रिय और विश्वसनीय मीडिया हाउस का सपना देखा था, मगर उसको साकार करने के लिए उन्होंने अर्नब गोस्वामी को चुना। दुनिया-भर के संसाधन जुटाकर रिपब्लिक चैनल बनवाया, मगर उस बेवक़ूफ़ ने राष्ट्रीय मीडिया में ऐसी महामारी फैलाई कि जिसका शिकार होकर तमाम बड़े चैनल्ज़ अपनी विश्वसनीयता खो बैठे और देश शर्मिंदा हो गया। वाशिंगटन पोस्ट के हालिया पोस्टमार्टम ने इस हक़ीक़त को पूरी तरह उजागर कर दिया। उसकी रिपोर्ट ने अत्यन्त स्पष्ट ढंग से साबित कर दिया कि टीआरपी (लोकप्रियता) बढ़ाने की चूहा दौड़ में शामिल गोदी मीडिया के तथाकथित पत्रकार जोश से बेक़ाबू होकर होश खो बैठे और ख़ुद को रुस्वा कर लिया। ऐसी बेवक़ूफ़ी करनेवालों ने किसी और का नहीं, बल्कि ख़ुद अपना ही नुक़सान कर लिया तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने व्यक्तित्व के साथ अपने देश की शर्मिंदगी का सामान भी कर दिया। इसकी बड़ी मिसाल 'टाइम्स नाव' के सुशांत सिन्हा हैं जो अपनी बेवक़ूफ़ी का बचाव करते हुए कहते हैं कि 'हर चैनल से ग़लती हुई, मगर हमारी कोई ग़लती देश के ख़िलाफ़ नहीं थी।' तो क्या इस हरकत से दुनिया में चारों ओर देश का गौरव बढ़ा या नाम रौशन हुआ? यही बात थी तो 'आजतक' ने खुले आम माफ़ी क्यों मांगी? फ़िल्हाल गोदी मीडिया के लक़ब से याद किए जानेवाले राष्ट्रीय संचार माध्यमों पर अल्लामा इक़बाल का ये शेर (संशोधन के साथ) फ़िट बैठता है—

वाए-नाकामी मताए-कारवाँ जाता रहा
मीडिया के दिल से एहसासे-ज़ियाँ जाता रहा

वाशिंगटन पोस्ट ने अपनी रिपोर्ट में इस तूफ़ाने-बदतमीज़ी के पीछे बीजेपी सरकार की पुश्तपनाही का इल्ज़ाम लगाया है, यानी पाकिस्तान के तमाम बड़े शहरों पर बमबारी, क़ब्ज़े और फ़तह के झूठे दावे सरकार के इशारे पर किए गए। इस झूठे प्रचार के लिए कृत्रिम बौद्धिकता (ए आई) के द्वारा जंग की

फ़र्ज़ी वीडियोज़, तसवीरें और मनगढ़ंत ख़बरें बनाकर अवाम में फैलाई गईं । यही वजह है कि अमेरिका का प्रतिष्ठित समाचारपत्र उसे पत्रकारिता के बजाय राज्य की छत्रछाया में तैयार किए हुए 'फ़िक्शन' का नाम देता है। वाशिंगटन पोस्ट के मुताबिक़ इस मुहिम का कुत्सित उद्देस्य देश की जनता और विश्व बिरादरी को गुमराह करके इस भू-भाग में तनाव का सियासी फ़ायदा उठाना था। इस कुत्सित प्रयास में झूठी जंगी ख़बरें फैलाने के लिए फ़िलाडेल्फ़िया में विमान दुर्घटना और वीडियो गेम्ज़ के दृश्यों तक को इस्तेमाल करने से गुरेज़ नहीं किया गया। ज़ी न्यूज़, एन.डी टीवी, आजतक और टाइम्स नाव जैसे देश के बड़े चैनलों ने धड़ल्ले से ग़ज़्ज़ा और सूडान की वीडियोज़ को पाकिस्तान पर हमले की वीडियोज़ के तौर पर पेश किया और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के हथियार डाल देने तक की ख़बर भी उड़ा दी।

सवाल यह है कि जब भारतीय नौसेना और वायु सेना ने किसी हमले की पुष्टि नहीं की तो न्यूज़ चैनलों को जंगी जुनून सवार करने के लिए ये सामग्री कहाँ से मिली? उनके हौसले इस क़दर बुलंद कैसे हो गए कि वे जंग जैसे संवेदनशील मामले में निस्संकोच झूठ बोलने लगे? सारांश यह कि भारतीय मीडिया के न्यूज़ रूम्ज़ में झूठी जानकारियों का वर्चस्व क्योंकर सम्भव हो सका? इन सवालों का सन्तोषजनक जवाब पाने की ख़ातिर वाशिंगटन पोस्ट के प्रतिनिधियों ने मात्र अटकलों पर भरोसा करने के बजाय दो दर्जन से अधिक वरिष्ठ पत्रकारों और कुछ वर्तमान और पूर्व सरकारी अधिकारियों से वार्ता करके जड़ तक पहुँचने का प्रयास किया, क्योंकि झूठ के इस पुलिंदे में से सच्चाई को अलग कर लेना कोई आसान काम नहीं था। इस कोशिश के दौरान विभिन्न कार्यरत पत्रकारों और सरकारी अधिकारियों से सम्पर्क करके बात की गई तो उनमें से अधिकतर लोगों ने अपने पेशावराना नुक़सान से डरकर मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए नाम ज़ाहिर न करने की शर्त पर चौंकानेवाले रहस्योद्घाटन किए। वाशिंगटन पोस्ट ने इन तथ्यों को अपनी रिपोर्ट में शामिल कर लिया।

समाचारपत्र के मुताबिक़ 9 मई को आधी रात में सरकारी प्रचार-प्रसार की संस्था प्रसार भारती से एक पत्रकार को वाट्स ऐप पर पाकिस्तान के आर्मी चीफ़ की गिरफ़्तारी और देश में बग़ावत का 'मैसेज' मिला। महाशय ने इस ख़बर को ऐक्स पर पोस्ट किया तो अन्य लोगों ने भी उसे हाथों-हाथ लिया और यह अफ़वाह चारों तरफ़ फैल गई। इसका दिलचस्प पहलू यह है कि जनरल आसिम मुनीर की गिरफ़्तारी की ख़बर उस वक्त उड़ाई जा रही थी जब उन्हें फ़ील्ड मार्शल के पद पर तरक्की देने की तैयारी चल रही थी। हमारे चैनल सुर्ख़ी लगा रहे थे 'एक गुजराती (जिनाह) ने पाकिस्तान बनाया और दूसरा गुजराती मोदी उसको मिटा रहा है'। इस गड़बड़ के लिए पूर्व विदेश सचिव निरुपमा राव सरकार को ज़िम्मेदार मानती हैं, क्योंकि लड़ाई के दौरान सरकार की ओर से कोई स्पष्ट राय सामने नहीं आ रही थी। जानकारी के अभाव को टीवी प्रसारण ने 'उग्रवादी राष्ट्रवाद' और 'असाधारण जीत के दावों' से एक 'समानान्तर सत्य' गढ़कर पूरा किया।

सरकार की बिन साबुन के धुलाई करनेवाले पोर्टल न्यूज़ लाँडरी की प्रमुख मनीषा पांडे ने उसे अतीत से जुड़ी कड़ी क़रार दिया। उनके मुताबिक़ 'यह पिछले दस सालों से बग़ैर किसी रोक-टोक के झूठ फैलानेवाले टीवी चैनलों की सबसे ख़तरनाक शक्ल है' उनके ख्याल में 'पूरी तरह बेक़ाबू (मीडिया) अब विशालकाय राक्षस बन चुका है।' दुनिया में कोई काम बेवजह नहीं होता। आम तौर पर उसे संचार मीडिया में भगवा के वर्चस्व को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है, मगर पांडे की नज़र में उसके पीछे अवसरवादिता काम कर

रही है। उनके मुताबिक़ 'अधिकतर ऐंकर्ज़ अपना मुस्तक़बिल संवारने की ख़ातिर सत्ता से निकटता की सोची-समझी रणनीति पर काम करते हैं।' एक और पत्रकार ने तथ्यों की पुष्टि के अभाव पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि अब पत्रकारिता वही है जो वाट्स ऐप पर आ जाए, चाहे कोई भी भेजे। आपको ऐसे वक़्त पर इसकी क़ीमत का अंदाज़ा होता है। लेकिन सवाल यह भी है कि जब झूठ बोलना अनिवार्य हो जाए तो इन्सान उसकी पुष्टि के चक्कर में क्यों पड़े।

वाशिंगटन पोस्ट ने अपनी रिपोर्ट में एक मिसाल के द्वारा यह बताया कि गोदी मीडिया के अंदर राई का पहाड़ कैसे बनाया जाता है। अख़बार लिखता है, '8 मई की रात एक जाने-माने हिन्दी चैनल के वाट्स ऐप ग्रुप में यह सन्देश आया कि भारतीय नौसेना किसी भी क्षण हमला कर सकती है।' इसके जवाब में किसी यूज़र ने बिना हवाले के सिर्फ़ कराची का इज़ाफ़ा किया। बस फिर क्या था, मिनटों में इस चैनल ने कराची की बंदरगाह पर हमले का झूठा दावा कर दिया। उसके बाद कुछ न्यूज़ रूम्ज़ ने नेवी या एयर फ़ोर्स से पुष्टि के मिलने की ख़बर उड़ाई। उस वक़्त गोदी मीडिया ने सरकार के समर्थक सोशल मीडिया एकाउंट्स मसलन बीजेपी आईटी सेल या ओपन सोर्स इंटेलिजेंस पोस्ट्स का हवाला देकर झूठ फैलाया। इंडिया टुडे जैसे सर्वविदित चैनल की ऐंकर सविता सिंह ने दावा कर दिया कि कराची 1971 के बाद अपने बदतरीन सपने का सामना कर रहा है। और यह ख़ुशख़बरी सुना दी कि 'यह पाकिस्तान का ख़ातिमा है।' 9 मई की सुबह 8 बजे कराची पोर्ट ट्रस्ट ने एक्स पर हमले का खंडन किया, मगर उस वक्त तक तीर कमान से निकल चुका था। यह झूठी ख़बर कई हिन्दी अख़बारों के पहले पृष्ठ की शोभा बन चुकी थी इसलिए पलटकर जाना सम्भव नहीं था।

गोदी मीडिया ने झूठी खबरों को सच्चाई पर आधारित क़रार देने के लिए सेवानिवृत फ़ौजी अधिकारियों के शोर-शराबे को जंग से सम्बन्धित प्रवक्ता के रूप में इस्तेमाल किया। यह दोनों के लिए फ़ायदे का सौदा था, क्योंकि ऐसा करके चैनल्ज़ अपनी टीआरपी बढ़ा रहे थे और पूर्व सैनिक शोहरत और दौलत से मालामाल हो रहे थे। जाँच के दौरान यह रहस्योद्‌घाटन हुआ कि बीजेपी सरकार के वाट्स ऐप ग्रुप्स ने ऐंकर्ज़ को झूठी ख़बरें दीं तो उन्होंने अपने आक़ाओं की ख़ुशनुदी के लिए उन्हें ज्यों-का-त्यों बिना पुष्टि किए प्रसारित कर दिया। एक सेक्योरिटी पदाधिकारी ने झूठी जानकारी के अवाम तक पहुँचाने को एक जंगी रणनीति का हिस्सा बता दिया। उसके मुताबिक़ जब प्रोपेगंडा तथ्यों पर हावी हो गया और सच्चाई की जगह सियासी वफ़ादारी ने ले ली तो इसका नुक़सान भारत को ही उठाना पड़ा। इस हक़ीक़त का सबसे बड़ा सुबूत वाशिंगटन पोस्ट की उक्त रिपोर्ट से हाथ आनेवाली दुनिया-भर की बदनामी है।

अपने झूठ को राष्ट्रीय हित का ग़िलाफ़ पहनाकर जायज़ ठहराने की प्रवृत्ति बहुत ख़तरनाक है। बीजेपी वालों की यह आदत है कि जब उनसे किसी ग़लती की पूछगछ करने के लिए सवाल किया जाता है तो वे उसे राष्ट्रीय हित के ख़िलाफ़ कहकर पूछगछ करनेवाले को देशद्रोही क़रार दे देते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि राष्ट्र की ख़ातिर सवाल पूछने की ज़िम्मेदारी जिन संचार माध्यमों पर है, वे भी अपनी ग़लतियों की पर्दापोशी के लिए राष्ट्रवाद की नक़ाब ओढ़ लेते हैं। वाशिंगटन पोस्ट की जाँच के दौरान एक सीनियर सेक्योरिटी कर्मचारी ने झूठी जानकारी को देश के हित में लाभकारी बताते हुए कहा कि- 'अगर निचली सतह के साधनों ने जान-बूझकर झूठ फैलाया तो उसका मक़सद दुश्मन को उलझाना था, क्योंकि वह देख रहा होता है।' मगर उसने यह भी स्वीकार किया कि 'कभी-कभार उसका नुक़सान अपनी जनता को होता है, लेकिन जंग अब ऐसी ही हो चुकी है।' मीडिया का झूठ बोलना और धोखाधड़ी के सामने इस तरह हथियार डाल देना सुधार के सारे दरवाज़े बंद कर देने के समान निराशाजनक स्थिति है।

■■ **मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क**

मीडिया मैप

में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें

One full Color Page : Rs. 150,000/- (one lakh fifty thousand only)

One full Page (Black and white) : Rs. 100000/- (One lakh only)

69 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम, गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : 9810385757/9910069262

Email : editor@mediamap.co.in

बढ़ते अपराध से मुकाबला : अंतरधार्मिक संवाद व जागरूकता जरूरी

धर्मों की एकता का शक्तिशाली प्रदर्शन करते हुए जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने एक अंतरधार्मिक ऑनलाइन सम्मेलन का आयोजन किया जिसका विषय था- 'समाज में बढ़ती अपराध दर और उन्हें रोकने के उपाय।' इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के उपाध्यक्ष प्रोफेसर इंजीनियर सलीम ने की। इसमें विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमियों के धार्मिक नेताओं और बुद्धिजीवियों ने भाग लिया और इस युग की एक सबसे गंभीर चुनौती पर विचार साझा किया।

प्रतिभागियों में स्वामी सुशील गोस्वामी महाराज, स्वामी सर्वलोकानंद, फादर नोर्बर्ट हेरमन, रब्बी ईजेकिएल इसहाक मालेकर, मर्ज़बान नरिमन ज़ैवाला, और सिस्टर बीके हुसैन शामिल थे। प्रोफेसर सलीम ने अपने मुख्य वक्तव्य में बढ़ते अपराध को गहरी नैतिक और सामाजिक संकट की स्थिति बताया। उन्होंने कहा, 'मानवता ईश्वर की सबसे उत्तम रचना है, लेकिन लोग अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भूल गए हैं, इसलिए अपराध बढ़ रहे हैं।' उन्होंने जोर दिया कि केवल दंडात्मक कानून पर्याप्त नहीं हैं—हमें दिल और दिमाग में बदलाव लाना होगा।

उन्होंने कई चिंताजनक रुझानों की ओर इशारा किया- महिलाओं और बच्चों के खिलाफ बढ़ती हिंसा, पारिवारिक अपराध, शक्तिशाली द्वारा कमजोरों का शोषण, और बुजुर्गों के खिलाफ भी क्रूर कृत्य। उन्होंने विशेष चिंता जताई कि कई अपराध राज्य के संरक्षण में हो रहे हैं। उन्होंने सरकार से अपराधियों को संरक्षण देना बंद करने और मीडिया से समाज में सौहार्द बढ़ाने की सकारात्मक भूमिका निभाने की अपील की।

प्रोफेसर सलीम ने यूक्रेन और फिलिस्तीन में हो रहे युद्ध अपराधों जैसे वैश्विक अन्याय को भी उजागर किया और सभी धर्मों और राष्ट्रों के लोगों से अपनी नैतिक चेतना जगाने और न्याय, करुणा और मानव गरिमा पर आधारित समाज के निर्माण की अपील की। स्वामी सुशील गोस्वामी महाराज ने इस पहल की सराहना की और कहा कि अपराध किसी एक धर्म की समस्या नहीं है। 'किसी एक मजहब को दोष नहीं दिया जा सकता,' उन्होंने कहा 'भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में हमें इन बुराइयों से मिलकर लड़ना होगा।' उन्होंने अंतरधार्मिक सहयोग का आह्वान किया और संसद से धर्म और सामाजिक मुद्दों पर राष्ट्रीय संवाद शुरू करने की अपील की।

सैयद खलीक अहमद

स्वामी सर्वलोकानंद ने कहा कि अपराध केवल भारत की नहीं बल्कि एक वैश्विक समस्या है, और इसका संबंध मानवीयता के पतन से है। उन्होंने कहा, 'बिना आस्था के व्यक्ति पशु जैसा हो जाता है।' उन्होंने शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने की बात कही। 'स्वयं में सुधार लाना ही समाज सुधार की पहली सीढ़ी है' उन्होंने जोड़ा।

फादर नोर्बर्ट हेरमन ने चेताया कि बढ़ती अन्याय और असमानता के कारण मानव गरिमा खतरे में है। उन्होंने मीडिया की भूमिका पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह नैतिक पतन को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने सामाजिक बुराइयों से लड़ने के लिए मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

रब्बी ईजेकिएल इसहाक मालेकर ने करुणा और आध्यात्मिक प्रकाश फैलाने की अपील की। उन्होंने कहा, 'ईश्वर दयालु है, और धर्म को भी वही दया दिखानी चाहिए।' उन्होंने न्याय व्यवस्था में सुधार की मांग की, यह दर्शाते हुए कि न्याय में देरी अपराध को बढ़ावा देती है। मर्जबान नरिमन जैवाला ने अपराध के मनोवैज्ञानिक कारणों पर बात करते हुए कहा कि अपराध सदैव से हैं, लेकिन रोकथाम संभव है अगर प्रारंभिक शिक्षा और मानसिक निर्माण पर जोर दिया जाए। 'बच्चों को कम उम्र में ही गलत कामों के परिणाम सिखाने चाहिए' उन्होंने कहा। 'सकारात्मक सोच घर से शुरू होनी चाहिए।'

सिस्टर बीके हुसैन ने कहा कि समाज एक नैतिक पतन के दौर से गुजर रहा है, जो व्यक्तिगत सोच और आध्यात्मिक विघटन के कारण है। 'लोग यह भूल गए हैं कि वे कौन हैं' उन्होंने कहा। 'आत्मचेतना की कमी और धर्म के नाम पर संकीर्णता टकराव को जन्म दे रही है।' उन्होंने प्रेम और भाईचारे के सार्वभौमिक मूल्यों की ओर लौटने का आग्रह किया और कहा कि असली परिवर्तन व्यक्ति के भीतर से शुरू होता है। समापन भाषण में प्रोफेसर सलीम ने घोषणा की कि इस विषय पर संवाद को आगे बढ़ाने और अपराध के खिलाफ नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण को प्रोत्साहित करने के लिए एक बड़े पैमाने पर ऑफलाइन सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। यह ऑनलाइन कार्यक्रम श्री वारिस हुसैन द्वारा संचालित किया गया और धर्मों की एकता को बढ़ावा देने और साझा चिंताओं को संबोधित करने के लिए एक दुर्लभ मंच तैयार करने के लिए इसे व्यापक सराहना मिली।

सांप्रदायिकता और धर्मांधता

भारत में भगवा राजनीतिक हथियार बना

भारत में भगवा अब सिर्फ एक रंग नहीं, बल्कि एक राजनीतिक हथियार बन चुका है। शिवाजी के नाम पर दंगे, भगवा झंडे के नाम पर मस्जिदों पर हमले, 'लव जिहाद' के नाम पर हत्याएं, और 'हिंदू राष्ट्र' के नाम पर मुसलमानों का बहिष्कार—ये सब एक सोची-समझी स्क्रिप्ट के तहत किया जा रहा है, ताकि आम हिंदू को यह अहसास हो कि उसकी कोई 'महान जीत' हो रही है। लेकिन यह जीत उतनी ही नकली है, जितनी किसी स्कैम कॉल में एक करोड़ की लॉटरी जीतने का झांसा। अगर झांसे में आ गए, तो कुछ पाने के बजाय जो है, वह भी लुट जाएगा।

असल में, यह सिर्फ एक नशा है, जो उसके असली दर्द को कुछ देर के लिए भुला देता है, लेकिन अंत बर्बादी में होता है। सवाल यह है कि इस खेल में उसकी जिंदगी में क्या बदला? महंगाई कम हुई? बेरोज़गारी खत्म हुई? अस्पतालों में इलाज सस्ता हुआ? शिक्षा सबको मिलने लगी? नहीं। बल्कि उल्टा, इन चीजों की हालत और बदतर हो गई।

किसी बेरोजगार युवा से पूछिए कि उसे नौकरी मिली या नहीं, जवाब मिलेगा—नहीं, लेकिन कम से कम हमने अयोध्या में मंदिर बना दिया। किसी किसान से पूछिए कि उसकी फसल का सही दाम मिला या नहीं, जवाब मिलेगा—पता नहीं, लेकिन सुना है कि सरकार औरंगजेब का इतिहास फिर से लिखने वाली है। मजदूर से पूछिए कि उसकी मजदूरी बढ़ी या नहीं, जवाब मिलेगा—नहीं, लेकिन अब फलाने नेता ने अब्दुल की चूड़ी टाइट करने की ठान ली है! असल मुद्दों से ध्यान हटाने का यह खेल इतनी चालाकी से खेला जाता है कि गरीब आदमी को यही नहीं पता चलता कि वह जो लड़ाई लड़ रहा है, वह उसकी अपनी नहीं है। वह मंदिर-मस्जिद की बहस में उलझा रहता है, जबकि उसकी जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं बचती।

दूसरी तरफ मुस्लिम समाज में भी यही खेल खेला जा रहा है। जब पाकिस्तान में किसी को ईशनिंदा के नाम पर भीड़ पीट-पीटकर मार डालती है, जब तालिबान लड़कियों की शिक्षा बंद कर देता है, जब किसी आतंकी संगठन के समर्थक इसे 'इस्लाम की जीत' बताते हैं, तब वहां भी वही झूठी खुशी परोसी जा रही होती है, जो हिंदू राष्ट्रवादियों को बेची जा रही है। वहां भी जनता को यही समझाया जाता है कि असली मुद्दा रोटी, रोजगार या शिक्षा नहीं, बल्कि 'धर्म का गौरव' है। जब एक तरफ नफरत बढ़ती है, तो दूसरी तरफ अपने आप भड़क उठती है। अगर यहां 'लव जिहाद' का प्रचार होता है, तो वहां 'इस्लाम खतरे में है' का नारा गूंजने लगता है। अगर यहां मंदिर-मस्जिद का विवाद उछलता है, तो वहां 'मुस्लिम युवाओं को मज़हब के लिए खड़ा होना चाहिए' जैसी बातें फैलाई जाती हैं। एक सांप्रदायिक उन्माद दूसरे का ईंधन बन जाता है और इस आग में जलता सिर्फ आम आदमी ही है—चाहे वह किसी भी धर्म का हो।

असल सवाल यह है कि आखिर इस सांप्रदायिक खेल से फायदा किसे हो रहा है? आम जनता के पास रोजगार नहीं, किसानों की फसल के उचित दाम नहीं मिल रहे हैं, मजदूरों की मेहनत का सही मूल्य नहीं मिल रहा, छोटे दुकानदार बड़ी कंपनियों की मार झेल रहे हैं, पढ़े-लिखे नौजवान ठेले लगाने पर मजबूर हैं, लेकिन इसके बजाय उन्हें क्या दिया जा रहा है? टीवी पर सांप्रदायिक बहस। किसी नेता ने बयान दे दिया कि फलाना राजा महान था या नहीं, पूरा देश इस पर लड़ने में जुट जाता है। कोई टीवी चैनल डिबेट करा रहा है कि किसका भगवान बड़ा है, लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि पेट्रोल क्यों महंगा हो गया? स्कूल-कॉलेज की फीस क्यों इतनी बढ़ गई? अस्पतालों में इलाज क्यों नहीं मिल रहा?

मंदिर-मस्जिद, औरंगजेब-शिवाजी, टीपू सुल्तान, मुगल बनाम विजयनगर, रामचरितमानस, लव जिहाद—ये सब बड़े नेताओं और कॉरपोरेट घरानों को बेरोकटोक लूटने देने की वो जादुई तरकीबें हैं, जिससे जनता को उनकी असली परेशानियों से दूर रखा जा सके। सोशल मीडिया पर धर्म बचाने की मुहिम चलती है, लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि शिक्षा इतनी महंगी क्यों हो गई है। लोग इस बात पर लड़ रहे हैं कि इतिहास में मुग़लों को आक्रांता क्यों नहीं दिखाया गया है, लेकिन कोई यह नहीं पूछ रहा कि अस्पताल में बेड क्यों नहीं हैं।

असल लड़ाई धर्म और जाति की नहीं, बल्कि आर्थिक आजादी की है, इस बात को जितनी जल्दी समझ लिया जाए, उतना बेहतर। जब तक जनता मंदिर-मस्जिद, हिंदू-मुस्लिम के चक्रव्यूह में फंसी रहेगी, तब तक उसका शोषण जारी रहेगा। असली लड़ाई उस पूंजीवादी सिस्टम से है जो गरीब को और गरीब बना रहा है, जो श्रम करने वालों का शोषण कर रहा है, जो धनी वर्ग को और अमीर बनाता जा रहा है। लेकिन यह बात जनता को समझने नहीं दिया जाता है, क्योंकि जैसे ही उसे असली दुश्मन दिख जाएगा, यह पूरा सांप्रदायिक खेल खत्म हो जाएगा।

अगर जनता ने समय रहते यह नहीं समझा, तो यह सांप्रदायिकता पूरे समाज को बर्बाद कर देगी। जब तक लोग असली मुद्दों पर सवाल नहीं उठाएंगे, तब तक नफरत की दुकानें चलती रहेंगी। अगर जनता असली मुद्दों को देखने लगे, सवाल पूछने लगे, तो यह नफरत बेचने वाले ठेकेदार कहीं के नहीं रहेंगे। सवाल यह है—क्या आम जन इस खेल को समझने को तैयार हैं, या अब भी किसी नए सांप्रदायिक मुद्दे के इंतजार में हैं?

■■ मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क

मोदी सरकार की बैलेंसिंग एक्ट महज दिखावा

13 जून को ईरान पर इज़राइल के मिसाइल हमले ने न केवल वैश्विक युद्ध के काले बादलों को और निकट ला दिया है, बल्कि कई छिपी हुई सच्चाइयों और तथ्यों को भी उजागर कर दिया है। इसमें भारत द्वारा अमेरिका समर्थित इज़राइल का पूर्ण समर्थन और साथ ही संतुलन बनाने का दिखावा करना शामिल है।

अंतरराष्ट्रीय मामलों में भारत की स्वतंत्र नीति या कार्रवाई का मोदी सरकार का दावा तब उजागर हो गया जब भारत ने एक बार फिर ईरान-इज़राइल संघर्ष पर संयुक्त राष्ट्र में मतदान से परहेज किया। शंघाई सहयोग संगठन के उस बयान से दूरी बनानाइस बात की पुष्टि करता है, जिसमें इज़राइल के ईरान पर हमले की निंदा की गई थी।

चीन की अध्यक्षता वाले एससीओ ने एक बयान जारी कर कहा कि उसके सदस्य देश ईरान-इज़राइल तनाव को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं और ईरानी क्षेत्र पर इज़राइल द्वारा किए गए सैन्य हमलों की कड़ी निंदा करते हैं।

तेहरान पर इज़राइल के शुरुआती हमलों के बाद, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपने ईरानी समकक्ष अब्बास अराघची से फोन पर बातचीत की, जिसमें उन्होंने घटनाक्रम को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की गहरी चिंता व्यक्त की।

विदेश मंत्रालय के अनुसार जयशंकर ने तनाव बढ़ाने वाले कदमों से बचने और जल्द से जल्द कूटनीति की ओर लौटने का आग्रह किया। मंत्रालय ने एक अलग बयान में भी अपनी चिंता व्यक्त की थी।

उनका कहा था कि हम स्थिति पर करीबी नजर रख रहे हैं, जिसमें परमाणु स्थलों पर हमलों से संबंधित रिपोर्टें भी शामिल हैं। दोनों पक्षों से संवाद और कूटनीति के मौजूदा माध्यमों का उपयोग करने की अपील की गई ताकि स्थिति को शांत करने की दिशा में काम हो सके। भारत दोनों देशों के साथ मैत्रीपूर्ण और घनिष्ठ संबंध रखता है

अंतरराष्ट्रीय मामलों में भारत की स्वतंत्र नीति या कार्रवाई का मोदी सरकार का दावा तब उजागर हो गया जब भारत ने एक बार फिर ईरान-इज़राइल संघर्ष पर संयुक्त राष्ट्र में मतदान से परहेज किया। शंघाई सहयोग संगठन के उस बयान से दूरी बनानाइस बात की पुष्टि करता है, जिसमें इज़राइल के ईरान पर हमले की निंदा की गई थी। चीन की अध्यक्षता वाले एससीओ ने एक बयान जारी कर कहा कि उसके सदस्य देश ईरान-इज़राइल तनाव को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं और ईरानी क्षेत्र पर इज़राइल द्वारा किए गए सैन्य हमलों की कड़ी निंदा करते हैं। तेहरान पर इज़राइल के शुरुआती हमलों के बाद, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपने ईरानी समकक्ष अब्बास अराघची से फोन पर बातचीत की, जिसमें उन्होंने घटनाक्रम को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की गहरी चिंता व्यक्त की। विदेश मंत्रालय के अनुसार जयशंकर ने तनाव बढ़ाने वाले कदमों से बचने और जल्द से जल्द कूटनीति की ओर लौटने का आग्रह किया। मंत्रालय ने एक अलग बयान में भी अपनी चिंता व्यक्त की थी।

और हरसंभव सहायता देने को तैयार है।

जहां भारत यह दावा करता रहा है कि वह ईरान के चाबहार बंदरगाह को मध्य एशिया और अफगानिस्तान के लिए अपने निर्यात द्वार के रूप में विकसित कर रहा है, वहीं अमेरिका के दबाव में इस परियोजना की प्रगति बेहद धीमी रही है। इसके उलट भारत और इज़राइल के बीच व्यापार खासकर रक्षा उपकरणों का हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ा है। भारत इज़राइल का सबसे बड़ा हथियार निर्यात बाजार बन गया है और हालिया जांच में सामने आया है कि भारत ने पिछले साल गाजा युद्ध के दौरान इज़राइल को रॉकेट और विस्फोटक बेचे थे।

शंघाई सहयोग संगठन के बयान से खुद को अलग करने से एक दिन पहले भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में उस मसौदा प्रस्ताव पर मतदान से परहेज़ किया था, जिसमें गाजा में तत्काल, बिना शर्त और स्थायी युद्धविराम की मांग की गई थी।

संयुक्त राष्ट्र में भारत का यह रुख दरअसल अमेरिका के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने की उसकी मंशा से प्रभावित था। विशेष रूप से उस व्यापार समझौते की पृष्ठभूमि में जिसे नई दिल्ली जुलाई की शुरुआत में राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारतीय वस्तुओं पर प्रस्तावित 27 फीसदी टैरिफ से पहले अंतिम रूप देना चाहती है।

दरअसल, भारत की फिलिस्तीन नीति में बदलाव की शुरुआत 2015 के मध्य में हुई थी, जब जुलाई में भारत ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में उस प्रस्ताव पर मतदान से परहेज़ किया था,जिसमें इज़राइल पर 2014 के गाजा युद्ध के दौरान युद्ध अपराधों का आरोप लगाया गया था। इस युद्ध को इज़राइल ने 'ऑपरेशन प्रोटेक्टिव एज' नाम दिया था।

महज एक साल पहले मोदी सरकार ने एक ऐसे प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया था जो इज़राइल की आलोचना करता था। इसी तरह भारत ने येरुशलम के संदर्भ में यूनेस्को में भी अपना रुख बदला। अप्रैल 2016 में, भारत ने बहुसंख्यक के साथ जाकर अरब समर्थित प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया था, जिसमें इस्लामिक दावों को मान्यता दी गई थी और यहूदी इतिहास या येरुशलम में इस्लाम से पहले मौजूद यहूदी मंदिरों का कोई उल्लेख नहीं था। लेकिन बाद में 13 अक्टूबर 2016 और 2 मई 2017 के दो वोटिंग में भारत ने मतदान से परहेज़ किया, जो इसकी पूर्व नीति से एकदम अलग विचलन था।

यह वह समय है जब इज़राइल-फिलिस्तीन मुद्दे को अलग-अलग देखने की नीति की शुरुआत हुई, लेकिन तब साफ हो गई जब प्रधानमंत्री मोदी ने इज़राइल तो गए, लेकिन वे रामल्ला (फिलिस्तीन) नहीं गए।

अब जब भारत और इज़राइल के बीच संबंध पिछले आठ वर्षों में मजबूत और गहरे हो गए हैं, तो संभवत: अब समय आ गया है कि भारत एक नई भूमिका निभाए।

दरअसल, भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अवतार भारतीय जनसंघ और हिंदू महासभा सहित दक्षिणपंथी संगठन एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमेशा से इज़राइल के प्रबल समर्थक रहे हैं और भारतीय सरकार से यहूदी राष्ट्र को पूर्ण राजनयिक मान्यता देने की मांग करते रहे हैं।

जनसंघ, प्रधानमंत्री नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार की इज़राइल नीति का सबसे बड़ा आलोचक था। जनसंघ का मानना था कि कांग्रेस की घरेलू और विदेश नीति मुस्लिम अल्पसंख्यकों को तुष्ट करने वाली है और यह कि कांग्रेस देश के भीतर मुस्लिम-समर्थक और बाहर अरब-समर्थक है।

1952 के पहले आम चुनाव में जनसंघ के घोषणापत्र में पार्टी की हिंदुत्ववादी सोच झलकती है, जिसमें कहा गया था कि धर्मनिरपेक्षता जैसा कि देश में व्याख्यायित की जाती है, केवल मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का एक मोहक रूप है। कथित धर्मनिरपेक्ष संयुक्त राष्ट्रवाद को न तो राष्ट्रवाद और न ही धर्मनिरपेक्षता बताया गया, बल्कि उसे ऐसे लोगों के सांप्रदायिक समझौते का परिणाम कहा गया जो देश के प्रति अपनी वफादारी के बदले में कीमत मांगते हैं।

इसी भावना को प्रतिबिंबित करते हुए, 23 दिसंबर 1953 को लोकसभा में एक जनसंघ सांसद ने यह मांग की

थी कि मुसलमानों को सेना, वायु सेना और पुलिस में नहीं लिया जाना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रमुख पद पर नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए, जिसमें मंत्रियों के अधिकारी भी शामिल हैं। इसके अलावा पाकिस्तान की सीमा से सौ मील की दूरी तक उन लोगों को हटा देना चाहिए, जिनकी पाकिस्तान की ओर झुकाव हो।

यह आम धारणा है कि दक्षिणपंथी पार्टियाँ, विशेष रूप से जनसंघ और उसके उत्तराधिकारी भाजपा, इज़राइल समर्थक रही हैं, क्योंकि वे मुस्लिम विरोधी हैं। जनसंघ की तरह भाजपा ने मुस्लिम अरब राज्यों के प्रति संदेह रखा और उनके विरोधी इज़राइल को भारत का संभावित सहयोगी माना। यह 1998 में तब दिखा जब भाजपा-नेतृत्व वाली एनडीए सरकार सत्ता में आई। 2004 तक एनडीए सरकार के छह वर्षों में भारत-इज़राइल द्विपक्षीय संबंध गहरे और मजबूत हुए।

तीन वर्षों के संकोच के बाद, मोदी ने अपने पूर्ववर्तियों की परंपरा को तोड़ते हुए जुलाई 2017 में इज़राइल की यात्रा की। किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली आधिकारिक यात्रा थी। प्रधानमंत्री मोदी 4 जुलाई 2017 को इज़राइल पहुंचे। इस यात्रा का महत्व इस बात से स्पष्ट था कि दोनों पक्षों ने अपने रिश्तों की गर्मजोशी और मित्रता को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इज़राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू लगभग पूरी यात्रा के दौरान मोदी के साथ रहे, जबकि मोदी ने अपने दौरे की शुरुआत मॉडर्न यहूदी राष्ट्रवाद के जनक थियोडोर हर्ज़ल को श्रद्धांजलि अर्पित करने से की, जो कि कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था।

इससे मोदी सरकार ने फिलिस्तीन और इज़राइल मुद्दों को अलग-अलग देखने की नीति पर निर्णायक कदम उठा लिया। इज़राइल यात्रा से पहले मोदी ने मार्च 2017 में फिलिस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास की नई दिल्ली में मेज़बानी की थी।

अब इज़राइल द्वारा ईरान पर आक्रमण और उस पर भारत की मौजूदा चुप्पी यह साफ दर्शाती है कि भारत ज़ायनिज़्म का डि-फैक्टो (वास्तविक) समर्थक बन चुका है, भले ही अभी तक वह उसका डि-ज्यूर (कानूनी) सदस्य न बना हो।

(लेखक सतीश मिश्रा वरिष्ठ पत्रकार हैं)

दक्षिणपंथी पार्टियाँ, विशेष रूप से जनसंघ और उसके उत्तराधिकारी भाजपा, इज़राइल समर्थक रही हैं, क्योंकि वे मुस्लिम विरोधी हैं। जनसंघ की तरह भाजपा ने मुस्लिम अरब राज्यों के प्रति संदेह रखा और उनके विरोधी इज़राइल को भारत का संभावित सहयोगी माना। यह 1998 में तब दिखा जब भाजपा-नेतृत्व वाली एनडीए सरकार सत्ता में आई। 2004 तक एनडीए सरकार के छह वर्षों में भारत-इज़राइल द्विपक्षीय संबंध गहरे और मजबूत हुए। तीन वर्षों के संकोच के बाद, मोदी ने अपने पूर्ववर्तियों की परंपरा को तोड़ते हुए जुलाई 2017 में इज़राइल की यात्रा की। किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली आधिकारिक यात्रा थी। प्रधानमंत्री मोदी 4 जुलाई 2017 को इज़राइल पहुंचे। इस यात्रा का महत्व इस बात से स्पष्ट था कि दोनों पक्षों ने अपने रिश्तों की गर्मजोशी और मित्रता को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इज़राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू लगभग पूरी यात्रा के दौरान मोदी के साथ रहे, जबकि मोदी ने अपने दौरे की शुरुआत मॉडर्न यहूदी राष्ट्रवाद के जनक थियोडोर हर्ज़ल को श्रद्धांजलि अर्पित करने से की, जो कि कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था।

- यह आम धारणा है कि दक्षिणपंथी पार्टियाँ, विशेष रूप से जनसंघ और उसके उत्तराधिकारी भाजपा, इज़राइल समर्थक रही हैं, क्योंकि वे मुस्लिम विरोधी हैं।
- जनसंघ की तरह भाजपा ने मुस्लिम अरब राज्यों के प्रति संदेह रखा और उनके विरोधी इज़राइल को भारत का संभावित सहयोगी माना। यह 1998 में तब दिखा जब भाजपा-नेतृत्व वाली एनडीए सरकार सत्ता में आई। 2004 तक एनडीए सरकार के छह वर्षों में भारत-इज़राइल द्विपक्षीय संबंध गहरे और मजबूत हुए।
- तीन वर्षों के संकोच के बाद, मोदी ने अपने पूर्ववर्तियों की परंपरा को तोड़ते हुए जुलाई 2017 में इज़राइल की यात्रा की। किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली आधिकारिक यात्रा थी।
- प्रधानमंत्री मोदी 4 जुलाई 2017 को इज़राइल पहुंचे। इस यात्रा का महत्व इस बात से स्पष्ट था कि दोनों पक्षों ने अपने रिश्तों की गर्मजोशी और मित्रता को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।
- इज़राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू लगभग पूरी यात्रा के दौरान मोदी के साथ रहे, जबकि मोदी ने अपने दौरे की शुरुआत मॉडर्न यहूदी राष्ट्रवाद के जनक थियोडोर हर्ज़ल को श्रद्धांजलि अर्पित करने से की, जो कि कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था।
- इससे मोदी सरकार ने फिलिस्तीन और इज़राइल मुद्दों को अलग-अलग देखने की नीति पर निर्णायक कदम उठा लिया। इज़राइल यात्रा से पहले मोदी ने मार्च 2017 में फिलिस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास की नई दिल्ली में मेज़बानी की थी।

विदेश नीति

ग़ाज़ा पट्टी की मदद को तैयार दुनिया

डॉ. सलीम खान

ग़ाज़ा पट्टी एक खुली जेल की तरह है, मगर इसमें रहने वाले लोग आज़ाद हैं। वे न सिर्फ अपनी आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं, बल्कि दुनिया भर के आज़ादी पसंद लोगों के लिए हिम्मत और उम्मीद का स्रोत बन गए हैं। आज इंसानियत के लिए आज़ादी की रोशनी उन्हीं के संघर्ष से जल रही है।

इस जेल को तोड़ने की कोशिश अंदर और बाहर दोनों ओर से हो रही है। 600 दिन पहले शुरू हुआ अल-अक्सा आंदोलन अंदर से उठी कोशिश थी, और फ्रीडम फ्लोटिला गठबंधन के तहत चलने वाला जहाज़ 'माडलीन' एक बाहरी प्रयास है। इस्राइल की अत्याचारी सरकार ने माडलीन जहाज़ को जब्त कर इस आज़ादी के काफिले की मंशा को दबाने की कोशिश की। इसमें सवार शांति के कार्यकर्ताओं को पकड़ना दरअसल आज़ादी की लहर को रोकने की नाकाम कोशिश है। लेकिन ये उम्मीद भी जल्द ही टूटेगी।

जब इस्राइल ने समुद्र में माडलीन पर हमला कर उसे कब्जे में लिया, तो दुनिया भर से हज़ारों लोग ग़ाज़ा के समर्थन में मिस्र की राजधानी काहिरा की ओर बढ़ने लगे। मिस्र के पड़ोसी देश जैसे तुनिशिया, अल्जीरिया, मौरिटानिया, मोरक्को और लीबिया से हज़ारों लोग रफ़ह बॉर्डर की ओर पहुंचने लगे। ये देखकर ट्रंप चौंक जाएंगे कि जो लोग ग़ाज़ा के लोगों को दूसरी जगह भेजने का सपना देख रहे थे, वही आज दुनिया भर से लोग ग़ाज़ा की आज़ादी के आंदोलन में शामिल होने के लिए उमड़ रहे हैं।

मिस्र की ओर पैदल रवाना होने वाले इस काफिले के बारे में 'फिलिस्तीन एक्शन तुनिशिया' ने कहा कि उनकी तैयारी पूरी है। तुनिशिया से 7000 से ज्यादा लोगों ने शामिल होने की इच्छा जताई, जिनमें से 2500 लोग सफर पर निकल चुके हैं। काहिरा से रफ़ह तक इसमें 10,00 से ज्यादा लोगों की भागीदारी की उम्मीद है।

इतने बड़े पैमाने पर शांति और इंसानियत के समर्थन में कोई आंदोलन बरसों बाद देखने को मिला है। इस काफिले का उद्देश्य ग़ाज़ा में घिरे हुए लोगों के साथ एकजुटता दिखाना और उन्हें इंसानी सहायता पहुंचाना है। तुनिशिया की 'फिलिस्तीन एक्शन' नाम की साझा संस्था इसका आयोजन कर रही है। तुनिशिया के शहरों से रवाना होकर ये काफिला लीबिया और मिस्र होते हुए ग़ाज़ा पहुंचेगा। ये काफिला काहिरा पहुंच कर अरीश और रफ़ह की ओर बढ़ा। रास्ते की योजना सुरक्षा और सहूलियतों को ध्यान में रखकर अंतरराष्ट्रीय सहयोग से बनाई गई है। इस कारवां के आयोजकों का कहना है कि अब चुप रहना मुमकिन नहीं था। एक मुसलमान, एक तुनिशियाई, एक अरबी और एक इंसान के तौर पर ये हमारा नैतिक फर्ज़ है क्योंकि चुप रहना भी एक अपराध है। जब पूरी की पूरी आबादी को भूखा मारा जा रहा हो, बमबारी हो रही हो और दम घोंटा जा रहा हो, तो दुनिया कैसे खामोश रह सकती है?

ये मार्च इंसाफ, एकता और इंसानी गरिमा की पुकार है। इसमें 52 से ज्यादा देशों के लोग शामिल हो रहे हैं, जो ये साबित करता है कि फिलिस्तीन का मसला अब राजनीति से ऊपर उठकर पूरी इंसानियत को एकजुट कर रहा है। चूंकि पहले भी इस्राईल शांतिपूर्ण आंदोलनों को निशाना बनाता रहा है, इस काफिले के लोग हर खतरे से निपटने के लिए तैयार हैं। वे बेखौफ कहते हैं कि 'हमारा खून ग़ाज़ा के लोगों से ज्यादा कीमती नहीं है।' यह एक गैर-हथियारबंद, आम लोगों का काफिला है। अगर इस्राइल इस शांति मार्च को भी रोकेगा, तो उसके अपराध फिर से दुनिया के सामने बेनकाब हो जाएंगे।

ग़ाज़ा के बहादुर लोग ही इस संघर्ष के असली नायक हैं। दुनिया भर से लोग उन्हें बता रहे हैं कि वे अकेले नहीं हैं। हज़ारों लोगों का समर्थन उनके हौसले और उम्मीदों को और मजबूत करेगा। भारत में इस मार्च की आयोजक सना सैयद कहती हैं कि यह इंसानियत की ओर एक अहम क़दम है। लोगों में ग़लतफहमियाँ थीं, मगर अब साफ हो गया है कि इस्राइल मासूम नागरिकों की हत्या कर रहा है। एक मां के रूप में वे फिलिस्तीनी बच्चों का दर्द महसूस करती हैं। सना कहती हैं कि बहुत से लोग इस यात्रा में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन भारत सरकार द्वारा फिलिस्तीन के समर्थन में हुए प्रदर्शनों पर कार्रवाई और इस्राइल के समर्थन ने कई लोगों में डर पैदा किया है। इसके बावजूद भारत से कई लोग इस मिशन में शामिल होने के लिए आगे आए हैं।

अगर भारत सरकार इस मिशन में रुकावट डालेगी, तो ये उसकी बदनामी का कारण बनेगा। इस बात की भी संभावना है कि इस मार्च से ग़ाज़ा के लिए एक स्थायी मानवीय सहायता का रास्ता खुले। डॉक्टर, छात्र, वकील और आम लोग मिलकर ग़ाज़ा के दरवाजे तक यह संदेश लेकर पहुंच रहे हैं कि इंसानियत अभी जिंदा है। 'माडलीन' का पकड़ा जाना इस उत्साह को नहीं रोक सका। यह शांति मिशन एक क्रांतिकारी गीत की याद दिलाता है-

रुके न जो, झुके न जो, मिटे न जो, दबे न जो
हम वो इंकलाब हैं,
जुल्म का जवाब हैं, हर गरीब, हर शहीद का - हम ही तो ख्वाब हैं।

8 दिन का सफर तय कर ग़ाज़ा के लिए निकली 'माडलीन' को इस्राइल ने अगवा कर लिया, लेकिन यह कश्ती न पहली थी, न आखिरी। पहले भी ऐसा होता रहा है, और आगे भी यह सिलसिला जारी रहेगा। ग़ाज़ा के लाखों लोगों की मदद के लिए माडलीन का मकसद वहां ज़िंदगी की ज़रूरी चीज़ें पहुंचाना था। इस पर 12 लोग सवार थे, जिनमें स्वीडन की पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थुनबर्ग और आयरलैंड के अभिनेता लियाम कनिंघम शामिल थे। माडलीन 'फ्रीडम फ्लोटिला' यानी आज़ादी के बेड़े का हिस्सा है।

इस पर यूरोपीय संसद की सदस्य रीमा हसन और अल-जज़ीरा के पत्रकार उमर फयाज़ भी सवार थे। इस्राइल के रक्षा मंत्री यिस्राइल काट्स ने जब सेना को इसे रोकने का आदेश दिया, तो जवाब में हमास नेता डॉ. बासिम नईम ने कहा कि इस्राईल के सभी नेता इन कार्यकर्ताओं की सुरक्षा के ज़िम्मेदार हैं। ■■■■

अंतरराष्ट्रीय संबंध

भारत-पाक शांतिपूर्ण संबंधों की पहल कैसे हो

सैयद खलीक अहमद

भारत में पाकिस्तान के पूर्व उच्चायुक्त और प्रसिद्ध राजनयिक अशरफ जहांगीर काज़ी ने भारत और पाकिस्तान दोनों के नेतृत्व से अपील की कि वे अपने-अपने देशों की जनता के हित में सभी संभव कदम उठाएं ताकि दोनों देशों के बीच शांति स्थापित की जा सके। यह अपील उन्होंने 19 जुलाई को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित एक ऑनलाइन चर्चा 'भारत-पाकिस्तान संबंध-शांति के लिए संवाद' के दौरान की। इस कार्यक्रम का आयोजन सेंटर फॉर पीस एंड प्रोग्रेस ने किया था, जिसकी अगुवाई श्री ओ.पी. शाह कर रहे हैं- जो दोनों परमाणु संपन्न पड़ोसी देशों के बीच संवाद और सुलह-सफाई के पुराने पैरोकार रहे हैं। शाह लंबे समय से दोनों देशों के बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, नीति निर्धारकों, विचारकों, शांति कार्यकर्ताओं और राजनयिकों के बीच निरंतर संवाद के ज़रिए शांति को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

इंडिया टुमॉरो अपने पाठकों के लिए श्री काज़ी का पूरा भाषण प्रस्तुत कर रहा है- इस बैठक का विषय ही हमारे दोनों देशों के सामने खड़ी स्थिति को बहुत अच्छी तरह संक्षेप में प्रस्तुत करता है। वर्तमान द्विपक्षीय संबंध इस बात को तय करेंगे कि संवाद की संभावनाएं कैसी हैं और उससे भी महत्वपूर्ण यह कि क्या ऐसे संवाद को बनाए रखना संभव है, और उससे भी बढ़कर यह कि क्या ऐसा संवाद सकारात्मक एवं परस्पर स्वीकार्य परिणाम दे सकता है।

इन तीनों ही मामलों में वर्तमान परिदृश्य अत्यंत निराशाजनक है क्योंकि दोनों देशों के नीति निर्माताओं में संवाद को प्राथमिकता देने में कोई स्पष्ट रुचि नहीं दिखती, खासकर उन मुद्दों के समाधान हेतु जिन्हें दोनों पक्ष 'मुख्य मुद्दे' मानते हैं। छोटे देश होने के नाते, और टकराव व संघर्ष की कीमत अधिक चुकाने वाले देश के रूप में, पाकिस्तान के पास तनाव कम करने और संवाद के ज़रिए प्रगति करने में अधिक हित है। फिर भी, ऑपरेशन सिंदूर या बुनियान मर्सूस के बाद, दोनों देशों में संवाद को लेकर रुचि और भी कम होती दिखती है।

ना तो विपक्षी दलों और ना ही आम जनमत में, किसी भी देश में, संवाद को प्राथमिकता देने की मांग दिखाई देती है- यहां तक कि एक जनसंपर्क अभियान के रूप में भी नहीं। इसके विपरीत, दोनों देशों में जो तत्काल चिंता का विषय है वह यह है कि क्या दुश्मनी का दूसरा दौर शुरू हो सकता है, और अगर ऐसा होता है तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं। यह एक भयावह स्थिति है क्योंकि दोनों देश परमाणु शक्ति संपन्न हैं, और संभव है कि उनके पास इस संघर्ष के दौरान 'एस्केलेशन लैडर' (टकराव के बढ़ते स्तर को नियंत्रित करने वाली प्रणाली) पर पूरा नियंत्रण न हो- खासकर तब जब दूसरा दौर सीमावर्ती क्षेत्रों से बाहर जाकर और व्यापक हो जाए, और परिणाम अप्रत्याशित तकनीकी क्षमताओं और युद्ध रणनीतियों पर निर्भर करें।

यही स्थिति इस बैठक को पूर्णतः औचित्य प्रदान करती है ताकि संवाद की संभावनाएं टटोली जा सकें। इसके लिए हम सभी श्री ओ. पी. शाह साहब के प्रति दिल से आभार प्रकट करते हैं। फिर भी, आज इस प्रकार के सकारात्मक परिणामों की संभावना पहले से कहीं अधिक धुंधली लगती है। अनुभवी राजनयिकों और विशेषज्ञों में भी, कुछ अपवादों को छोड़कर, शून्य-राशि (zero-sum) मानसिकता से ऊपर उठने का प्रयास कठिन प्रतीत होता है। इसका कारण यह है कि हम एक-दूसरे के प्रति विरोधी और असंगत नैरेटिव को इतना अधिक आत्मसात कर चुके हैं कि वर्तमान स्थिति को जारी रखना हमें राजनीतिक समझौतों से कहीं कम लागत वाला विकल्प लगता है।

इन परिस्थितियों में, मेरे विलक्षण मित्र मणिशंकर अय्यर की यह भावुक मांग कि 'संवाद अनवरत और अबाधित होना चाहिए' अब एक बहुत दूर का सपना

♦♦

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित एक ऑनलाइन चर्चा 'भारत-पाकिस्तान संबंध-शांति के लिए संवाद' के दौरान की। इस कार्यक्रम का आयोजन सेंटर फॉर पीस एंड प्रोग्रेस ने किया था, जिसकी अगुवाई श्री ओ.पी. शाह कर रहे हैं- जो दोनों परमाणु संपन्न पड़ोसी देशों के बीच संवाद और सुलह-सफाई के पुराने पैरोकार रहे हैं। शाह लंबे समय से दोनों देशों के बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, नीति निर्धारकों, विचारकों, शांति कार्यकर्ताओं और राजनयिकों के बीच निरंतर संवाद के ज़रिए शांति को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। इंडिया टुमॉरो अपने पाठकों के लिए श्री काजी का पूरा भाषण प्रस्तुत कर रहा है- इस बैठक का विषय ही हमारे दोनों देशों के सामने खड़ी स्थिति को बहुत अच्छी तरह संक्षेप में प्रस्तुत करता है। वर्तमान द्विपक्षीय संबंध इस बात को तय करेंगे कि संवाद की संभावनाएं कैसी हैं और उससे भी महत्वपूर्ण यह कि क्या ऐसे संवाद को बनाए रखना संभव है, और उससे भी बढ़कर यह कि क्या ऐसा संवाद सकारात्मक एवं परस्पर स्वीकार्य परिणाम दे सकता है। इन तीनों ही मामलों में वर्तमान परिदृश्य अत्यंत निराशाजनक है क्योंकि दोनों देशों के नीति निर्माताओं में संवाद को प्राथमिकता देने में कोई स्पष्ट रुचि नहीं दिखती, खासकर उन मुद्दों के समाधान हेतु जिन्हें दोनों पक्ष 'मुख्य मुद्दे' मानते हैं।

♦♦

बन चुकी लगती है। इसका एक उदाहरण हाल ही में एक पूर्व पाकिस्तानी विदेश मंत्री का एक प्रसिद्ध भारतीय पत्रकार द्वारा लिया गया साक्षात्कार था, जिसमें अधिकतर सवाल भारत के नैरेटिव को दर्शाते थे, और उत्तर पाकिस्तानी दृष्टिकोण से ही दिए गए। दोनों देशों के दर्शक संतुष्ट थे, लेकिन संवाद की संभावनाओं को बढ़ाने के ठोस उपायों पर कोई चर्चा नहीं हुई।

अब प्रश्न यह है कि जब जो लोग निर्णय लेने की स्थिति में हैं, वे किसी प्रकार की प्रगति के लिए तैयार नहीं हैं, तब दोनों देश आगे कैसे बढ़ें? यह निश्चित रूप से दोनों देशों और पूरे दक्षिण एशिया के लिए एक घाटे का सौदा है। इस क्षेत्र को परमाणु युद्ध की आशंका से बचना है, जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी परिणामों से जूझना है, सुशासन और विकास के व्यापक मुद्दों से निपटना है, और दक्षिण एशिया को वैश्विक आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बनाना है। इसलिए, भारत-पाक संबंधों का कायाकल्प और SAARC का पुनर्जीवन पूरे क्षेत्र की प्राथमिक आवश्यकता बन चुका है।

यह सब संभव है- लेकिन इसके लिए धारणाएं और संभावनाएं दोनों बदलनी होंगी। भारत फिलहाल पाकिस्तान को एक असफल होते देश के रूप में देखता है, जिसके साथ दीर्घकालिक जुड़ाव निरर्थक माना जा रहा है। वहीं, पाकिस्तान भारत को एक क्षेत्रीय आधिपत्यवादी (Hegemon) के रूप में देखता है, जो चीन की दक्षिण एशिया में उपस्थिति से हताश है। चीन भारत को अमेरिका के प्रतिनिधि की भूमिका निभाने वाला मानता है। इस नकारात्मक परिदृश्य में, दोनों देश एक-दूसरे को अस्थिरता फैलाने वाले कार्यों में लिप्त मानते हैं-और कुछ हद तक ऐसा मानना तर्कसंगत भी है।

अत: चुनौती यह है कि दोनों देशों के राजनीतिक नेताओं, नीति निर्माताओं, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और जनमत-निर्माताओं को यह समझाया जाए कि उनके बीच साझा अस्तित्व का हित है, और उन्हें अपने संबंधों की नीति को दीर्घकालिक दृष्टिकोण में रखना होगा- वरना अपरिवर्तनीय विनाशकारी स्थितियां पैदा हो जाएंगी। असंभव-सा लगने वाला कार्य अब अनिवार्य हो गया है। दोनों देशों के प्रमुख निर्णयकर्ताओं को किसी प्रकार का राजनीतिक आत्मबोध प्राप्त करना होगा। यदि ऐसा न हुआ, और यदि दोनों देशों की राजनीतिक बुद्धिजीविता भी अपने उत्तरदायित्व को पहचानने में विफल रही — जैसा कि संभव लगता है- तब यह बैठक केवल एक सामाजिक भेंट बनकर रह जाएगी, न कि कोई राजनीतिक महत्व रखने वाली घटना।

वर्तमान में कई प्रकार के विश्वास-निर्माण उपाय (Confidence-Building Measures)- कुछ लागू, कुछ अधूरे, कुछ समाप्त और कुछ विचाराधीन-उपलब्ध हैं, जिनसे प्रक्रिया की शुरुआत की जा सकती है। परंतु, इस प्रक्रिया को स्थायी बनाने के लिए दोनों देशों को यह स्वीकार करना होगा कि उनके एक-दूसरे के प्रति जो संदेह और चिंताएं हैं, वे काफी हद तक वास्तविकता पर आधारित हैं। इन्हें संबोधित किए बिना आपसी विश्वास का निर्माण असंभव है-और इसी विश्वास से ही समझौता, समायोजन और अंतत: संबंधों का सामान्यीकरण संभव है। यही एकमात्र तरीका है जिससे आज जो असंभव लगता है, वह साझा ज़मीनी हकीकत बन सकता है।

यह समूह एक साझा वक्तव्य जारी करने पर विचार कर सकता है जिसमें भारत-पाक संबंधों के सुधार की अनिवार्यता को दोहराया जाए ताकि 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटा जा सके- खासकर उस दक्षिण एशिया में, जो विश्व की लगभग एक-चौथाई मानवता का घर है। भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्रियों के बीच आपसी यात्राओं की सिफारिश की जानी चाहिए-जिनका उद्देश्य आपसी विश्वास का निर्माण, एक-दूसरे की चिंताओं का समाधान और सहयोग की संभावनाओं की दिशा में ठोस कदमों को स्पष्ट करना हो। पहली बैठक सामान्य हो सकती है- जो संबंधों को बदलने की इच्छा और तैयारियों का संकेत दे। इसका उद्देश्य संभावना की हल्की सी उम्मीद जगाना होगा। दूसरी बैठक लगभग एक महीने बाद हो, जिसमें संबंधित विशेषज्ञ और सभी पक्ष गहराई से तैयारियों के साथ सम्मिलित हों- ताकि अतीत में जो विषय संवाद का हिस्सा रहे हैं, उन पर ठोस कदम सुझाए जा सकें। यदि यह सब हो पाया, तो दूसरी बैठक एक व्यापक सामान्यीकरण और युद्ध की संभावना को समाप्त करने की दिशा में ठोस समझ बना सकती है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

तीर्थयात्रा और जनता की परेशानी

एक धार्मिक यात्रा जो कभी बहुत सभ्य थी, वह अब एक सार्वजनिक व्यवस्था की समस्या बन चुकी है। कांवड़ यात्रा, जो श्रावण मास में भगवान शिव के लिए पवित्र जल लाने की व्यक्तिगत तीर्थयात्रा हुआ करती थी, अब उत्तर भारत के बड़े हिस्सों को जाम कर देती है। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में, यह वार्षिक परंपरा अब धार्मिक उत्साह के नाम पर आर्थिक और नागरिक बोझ बन चुकी है।

2022 में, 3.8 करोड़ से अधिक कांवड़ियों ने इस यात्रा में भाग लिया। 2025 में, केवल उत्तर प्रदेश में ही 6 करोड़ यात्रियों की संभावना जताई जा रही है। ये आंकड़े धार्मिक विश्लेषकों को भले ही प्रभावित करें, लेकिन करोड़ों स्थानीय निवासी और कामकाजी लोग इसके कारण बंद सड़कों, ठप कारोबार, बाधित आपूर्ति श्रृंखलाओं, बंद स्कूलों और थकी हुई पुलिस व्यवस्था से जूझते हैं।

ऐसा हमेशा नहीं था। 1990 के दशक के मध्य तक, कांवड़ यात्रा वाराणसी, हरिद्वार और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में एक शांत और सीमित परंपरा थी। श्रद्धालु अकेले या छोटे समूहों में यात्रा करते थे, बिना शोर-शराबे या अव्यवस्था के। हरिद्वार में भीड़ शायद ही कभी कुछ हजारों से आगे जाती थी। 1990 के दशक में उदारीकरण के बाद, धार्मिक राष्ट्रवाद के बढ़ते प्रभाव और आर्थिक असंतुलन के चलते इसका स्वरूप बदलने लगा। नौकरियों की कमी और आर्थिक तनाव के कारण, यह यात्रा श्रद्धा के साथ-साथ पहचान जताने और कुंठा निकालने का माध्यम भी बन गई।

धीरे-धीरे यात्रा का स्वर आक्रामक होने लगा। 'हर हर महादेव' जैसे पारंपरिक जयघोष की जगह 'जय श्री राम' जैसे राजनीतिक नारों ने ले ली। हिंसा और टकराव बढ़ने लगे। केवल 2024 में ही लगभग 20 हिंसक घटनाएं दर्ज की गईं, जिनमें अधिकांश पश्चिमी उत्तर प्रदेश से थीं। हाईवे जाम किए गए, वाहनों को नुकसान पहुंचाया गया, मिर्जापुर में एक सीआरपीएफ जवान पर हमला हुआ। एक मामूली बात पर स्कूल बस पर हमला कर दिया गया। एक ढाबे को इस आरोप में नुकसान पहुंचाया गया कि वहां प्याज वाला खाना परोसा गया-जो यात्रा के व्रत नियमों के खिलाफ माना गया।

इसके विपरीत, बिहार और झारखंड में सुल्तानगंज के अजगैविनाथ और देवघर के वैद्यनाथ धाम की कांवड़ यात्राएं शांतिपूर्ण रूप से जारी हैं। वहाँ के यात्री सड़क उपयोगकर्ताओं और राहगीरों का सम्मान करते हैं। किसी प्रकार की हिंसा की कोई रिपोर्ट नहीं है। यहां तक कि केरल की सबरीमाला यात्रा भी, जिसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं, अनुशासन से पूर्ण होती है।

लेकिन उत्तर भारत में नागरिक जीवन ठप हो जाता है। प्रशासन धारा 144 लगाता है, स्कूल बंद कर दिए जाते हैं, यातायात के रास्ते बदल दिए जाते हैं, और हजारों पुलिसकर्मियों की तैनाती करनी पड़ती है। यात्री अक्सर नियमों का उल्लंघन करते हैं-चलती गाड़ियों पर नाचते हैं, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं, और हॉकी स्टिक व बेसबॉल बैट जैसे प्रतिबंधित सामान लेकर चलते हैं। एक खतरनाक प्रवृत्ति यह भी है कि अब कुछ यात्री गैर-हिंदुओं के संस्थानों पर हमला करने लगे हैं। कुछ कस्बों में ढाबा मालिकों को अपना धर्म सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने के लिए कहा गया-जो एक तरह से लक्षित बहिष्कार जैसा है।

ऐसे भेदभाव के खिलाफ अदालत के आदेशों के बावजूद, इनका पालन कमजोर है। राजनेता ज्यादातर चुप हैं। कुछ तो इस तमाशे को मौन समर्थन भी देते हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, जो पहले यात्रियों पर पुष्पवर्षा कर चुके हैं, हाल में हिंसा के लिए 'शरारती तत्वों' को दोषी ठहराते हैं-लेकिन व्यवस्था की गहराई से जांच नहीं करते। उनके बयान सच्चे श्रद्धालुओं और धार्मिक तमाशा करने वालों के बीच अंतर तो करते हैं, पर कानून का प्रवर्तन अब भी अस्पष्ट है।

आर्थिक दृष्टि से इसका एक दूसरा पहलू भी है। यात्रा से मौसमी बाजार उफान पर होता है-भगवा वस्त्र, बांस की कांवड़, पानी की बोतलें, छतरियां और स्पोर्ट्स शूज़ की बिक्री बढ़ती है। रेस्टोरेंट, लॉज और दुकानदार करोड़ों कमाते हैं। लेकिन ये अल्पकालिक लाभ उस विशाल नुकसान के सामने फीके पड़ जाते हैं जो ठप उत्पादकता, ट्रैफिक अव्यवस्था और सार्वजनिक संपत्ति के नुकसान से होता है। हर यात्री द्वारा खर्च किए गए एक

रुपये के बदले, कई रुपये अव्यवस्था में बर्बाद होते हैं।

अब तक कोई बड़ा धार्मिक नेता, आध्यात्मिक संस्था या राजनीतिक व्यक्ति इस बढ़ती अराजकता की आलोचना नहीं कर पाया है। यह चुप्पी चिंताजनक है। हाल ही में एक समूह ने, कांवड़ियों के भेष में, एक फास्ट फूड आउटलेट पर हमला किया, उसका कांच तोड़ा और सोशल मीडिया पर सेल्फी पोस्ट की। तब जाकर, जब राजनेता अखिलेश यादव ने ट्वीट किया, पुलिस ने एफआईआर दर्ज की।

पुलिस को कुछ श्रेय जरूर दिया जाना चाहिए-उन्होंने कुछ मामलों में कार्रवाई की है, वो भी राजनीतिक दबावों के बावजूद। लेकिन उनके संसाधन सीमित हैं और जब कांवड़ यात्रा चुनावी रैलियों और पहचान की राजनीति का हिस्सा बनती जा रही है, तब कानून का पालन और कठिन हो जाता है।

इस सबके पीछे एक बड़ा सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य है। 1990 के दशक के बाद से, भारत के मेहनतकश वर्ग को नौकरियों की असुरक्षा, घटती वास्तविक आय, बढ़ती महंगाई और असमानता का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में, कांवड़ यात्रा उनके लिए एक तरह की राहत और पहचान का साधन बन सकती है। लेकिन इससे हिंसा, घृणा और नागरिक अव्यवस्था को सही नहीं ठहराया जा सकता।

कांवड़ यात्रा अपनी आध्यात्मिक भावना से भटक चुकी है। अगर इसे नियंत्रित और सुधारित नहीं किया गया, तो यह हर साल एक नागरिक और सामाजिक संकट बनती जाएगी। धार्मिक नेताओं को आगे आकर इस यात्रा की गरिमा को पुनर्स्थापित करना चाहिए। राजनेताओं को इसका चुनावी लाभ उठाने से बचना चाहिए। समाजशास्त्रियों को भी इसकी बदलती प्रवृत्तियों और असहिष्णुता की ओर बढ़ते झुकाव का अध्ययन करना चाहिए। भगवान शिव, जो शांति और परिवर्तन के प्रतीक हैं, उनके प्रति सम्मान और भक्ति का बेहतर तरीका अपनाया जाना चाहिए।

■■ **मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क**

नौकरियों की कमी और आर्थिक तनाव के कारण, यह यात्रा श्रद्धा के साथ-साथ पहचान जताने और कुंठा निकालने का माध्यम भी बन गई। धीरे-धीरे यात्रा का स्वर आक्रामक होने लगा। 'हर हर महादेव' जैसे पारंपरिक जयघोष की जगह 'जय श्री राम' जैसे राजनीतिक नारों ने ले ली। हिंसा और टकराव बढ़ने लगे। केवल 2024 में ही लगभग 20 हिंसक घटनाएं दर्ज की गईं, जिनमें अधिकांश पश्चिमी उत्तर प्रदेश से थीं। हाईवे जाम किए गए, वाहनों को नुकसान पहुंचाया गया, मिर्जापुर में एक सीआरपीएफ जवान पर हमला हुआ। एक मामूली बात पर स्कूल बस पर हमला कर दिया गया। एक ढाबे को इस आरोप में नुकसान पहुंचाया गया कि वहां प्याज वाला खाना परोसा गया-जो यात्रा के व्रत नियमों के खिलाफ माना गया। इसके विपरीत, बिहार और झारखंड में सुल्तानगंज के अजगैविनाथ और देवघर के वैद्यनाथ धाम की कांवड़ यात्राएं शांतिपूर्ण रूप से जारी हैं। वहाँ के यात्री सड़क उपयोगकर्ताओं और राहगीरों का सम्मान करते हैं। किसी प्रकार की हिंसा की कोई रिपोर्ट नहीं है। यहां तक कि केरल की सबरीमाला यात्रा भी, जिसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं, अनुशासन से पूर्ण होती है। लेकिन उत्तर भारत में नागरिक जीवन ठप हो जाता है। प्रशासन धारा 144 लगाता है, स्कूल बंद कर दिए जाते हैं, यातायात के रास्ते बदल दिए जाते हैं, और हजारों पुलिसकर्मियों की तैनाती करनी पड़ती है। यात्री अक्सर नियमों का उल्लंघन करते हैं-चलती गाड़ियों पर नाचते हैं, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं, और हॉकी स्टिक व बेसबॉल बैट जैसे प्रतिबंधित सामान लेकर चलते हैं। एक खतरनाक प्रवृत्ति यह भी है कि अब कुछ यात्री गैर-हिंदुओं के संस्थानों पर हमला करने लगे हैं। कुछ कस्बों में ढाबा मालिकों को अपना धर्म सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने के लिए कहा गया-जो एक तरह से लक्षित बहिष्कार जैसा है।

भारत -इंग्लैंड टेस्ट सीरीज : भारतीय खिलाड़ियों का होगा शानदार प्रदर्शन!

भारत और इंग्लैंड के बीच इस समय टेस्ट सीरीज चल रही है और मामला चौथे टेस्ट तक आ गया है। टीम इंडिया को दो मैचों में हार और एक में जीत मिली है। इंग्लैंड इस सीरीज में मजबूत दिखाई दे रही है। टीम इंडिया के लिए चौथा टेस्ट मैच करो या मरो की स्थिति वाला है.

टेस्ट सीरीज जारी है, इस दौरान एक और सीरीज की घोषणा हुई है। इंग्लैंड के खिलाफ टीम इंडिया सफेद गेंद क्रिकेट खेलने वाली है लेकिन वह सीरीज अभी नहीं है। इसके शेड्यूल की घोषणा की गई है। यह भी पता चला है कि सफेद गेंद क्रिकेट में कितने मैच खेले जाएंगे।

भारतीय टीम का इंग्लैंड दौरा

भारत की टीम अगले साल एक बार फिर इंग्लैंड दौरे पर जाएगी, इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ECB) ने 2026 के लिए घरेलू कार्यक्रम की घोषणा करते हुए यह जानकारी दी। वर्तमान में पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला में 2-1 से पीछे चल रही भारतीय टीम 2026 में इंग्लैंड लौटेगी, जहां वह पांच टी 20 अंतरराष्ट्रीय और खिलाफ टेस्ट मैच के साथ करने वाली है। यह सीजन 4 जून से ही शुरू हो जाएगा। भारत के खिलाफ अभियान की शुरुआत जुलाई में होनी है। टीम इंडिया से 1 जुलाई को इंग्लिश टीम पहला टी 20 मुकाबला खेलेगी।

इस साल इंग्लैंड की टीम ने भारत दौरा किया था, चैम्पियंस ट्रॉफी से ठीक पहले यह दौरा हुआ था और टीम इंडिया ने मेहमान टीम को पराजित किया था। अगले साल तक कोहली और रोहित वनडे सीरीज के लिए उपलब्ध रहेंगे या नहीं, यह देखना होगा। दोनों फ़िलहाल टेस्ट और टी 20 को अलविदा कह चुके हैं। माना जा रहा है कि दोनों अगला एकदिवसीय वर्ल्ड कप खेलकर रिटायर होंगे। यह भी दिलचस्प होगा कि अगले साल वनडे में टीम इंडिया की कमान किसके हाथ में होगी।

भारत-इंग्लैंड के बीच सफेद गेंद सीरीज का कार्यक्रम

पहला टी 20	01-07-2026	डरहम
दूसरा टी 20	04-07-2026	मैनचेस्टर
तीसरा टी 20	07-07-2026	नॉटिंघम
चौथा टी 20	09-07-2026	ब्रिस्टल
पांचवां टी 20	11-07-2026	साउथैम्पटन
पहला वनडे	14-07-2026	बर्मिंघम
दूसरा वनडे	16-07-2026	कार्डिफ
तीसरा वनडे	19-07-2026	लंदन

मैच की जानकारी

- **मैच :** भारत बनाम इंग्लैंड, टेस्ट सीरीज
- **वेन्यू :** हेडिंग्ले, लीड्स (पहला टेस्ट), एजबेस्टन, बर्मिंघम (दूसरा टेस्ट), लॉर्ड्स (तीसरा टेस्ट)।
- **तारीख और समय :** पहला टेस्ट 20-24 जून, दूसरा टेस्ट 2-6 जुलाई, तीसरा टेस्ट की तारीख अभी घोषित नहीं।

टीमों की स्थिति : भारतीय टीम की कप्तानी शुभमन गिल कर रहे हैं, जबकि इंग्लैंड की कप्तानी बेन स्टोक्स के हाथों में है। भारतीय टीम में यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, साई सुदर्शन, ऋषभ पंत जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं, जबकि इंग्लैंड की टीम में जैक क्रॉली, बेन डकेट, ओली पोप जैसे मजबूत बल्लेबाज हैं।

पिच रिपोर्ट : लीड्स में पहले टेस्ट में पिच से सीम और उछाल की उम्मीद थी, जबकि बर्मिंघम में दूसरे टेस्ट में पिच की स्थिति थोड़ी अलग हो सकती है। लॉर्ड्स में तीसरे टेस्ट में पिच की ढलान और ऊपर-नीचे जाने वाली गति बल्लेबाजों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती है।

मैच के परिणाम : पहले टेस्ट में इंग्लैंड ने भारत को 5 विकेट से हराया, जबकि दूसरे टेस्ट का परिणाम अभी आना बाकी है। तीसरे टेस्ट में भारत की कोशिश होगी कि वह लॉर्ड्स में अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी का शानदार प्रदर्शन करे। ▪▪

अश्लीलता बर्दाश्त नहीं : 24 ओटीटी प्लेटफार्म पर लगा बैन

भारत सरकार ने ऑनलाइन अश्लीलता पर नकेल कसते हुए ULLU, ALTT, MoodX, Big Shots जैसे 24 ऐप्स और वेबसाइट्स को तत्काल प्रभाव से बैन कर दिया है। ये सभी डिजिटल प्लेटफॉर्म्स कथित तौर पर अश्लील, अभद्र और सॉफ्ट पोर्न जैसे कंटेंट परोस रहे थे, जो भारतीय कानूनों का सीधा उल्लंघन माना गया है।

यह कार्रवाई सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा की गई है, जिसके तहत देशभर की सभी इंटरनेट सेवा प्रवा कंपनियों को इन ऐप्स वेबसाइट्स को तत्काल ब्लॉक करने के निर्देश दिए गए हैं।

भारतीय न्याय संहिता 2023 और स्त्री अशिष्ट रूपण अधिनियम 1986 जैसे कानूनों के उल्लंघन को आधार बनाकर लिया है। इन सभी प्लेटफॉर्म्स पर आपत्तिजनक, यौन रूप से उत्तेजक और महिलाओं को गलत तरीके से चित्रित करने वाले कंटेंट के प्रसारण का आरोप था।

आईटी एक्ट, 2000 की धारा 67 और 67 के तहत इंटरनेट पर अश्लील सामग्री का प्रकाशन, प्रसारण और वितरण दंडनीय अपराध है।

प्रतिबंधित ओटीटी प्लेटफॉर्म

- **उल्लू :** उल्लू ऐप की शुरुआत 2018 में हुई थी और इसके संस्थापक विभु अग्रवाल थे। यह प्लेटफॉर्म अपने बोल्ड कंटेंट के लिए जाना जाता था।
- **एल्ट बालाजी :** एकता कपूर का एल्ट बालाजी एडल्ट थीम वाले शो बनाने के लिए फेमस था।
- **बिग शॉट्स :** यह प्लेटफॉर्म भी अश्लील सामग्री के लिए जाना जाता था।
- **देसीफ्लिक्स :** देसीफ्लिक्स भी उन प्लेटफॉर्मों में से एक है जो अश्लील सामग्री प्रसारित करता था।
- इनके अलावा बूमेक्स, नवरसा लाइट, गुलाब ऐप, कंगन ऐप, बुल ऐप, जलवा ऐप और अन्य शामिल हैं।

सरकार की कार्रवाई सराहनीय

सरकार ने इन प्लेटफॉर्मों पर प्रतिबंध लगाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, २००० की धारा ६७ और ६७ए, भारतीय न्याय संहिता, २०२३ की धारा २९४ और महिलाओं के अश्लील प्रदर्शन (निषेध) अधिनियम, १९८६ की धारा ४ के तहत कार्रवाई की है। सरकार का उद्देश्य डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर अश्लील सामग्री को रोकना और नैतिकता को बनाए रखना है।

भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 294 सार्वजनिक स्थानों पर अश्लील गतिविधियों या कंटेंट के प्रसार पर रोक लगाती है।

स्त्री अशिष्ट रूपण (प्रतिषेध) अधिनियम, 1986 महिलाओं को आपत्तिजनक रूप में प्रस्तुत करने वाले विज्ञापनों और कंटेंट पर प्रतिबंध लगाता है।

सरकार का कहना है कि इन प्लेटफॉर्म्स के खिलाफ मिली शिकायतों और जांच रिपोर्ट्स के आधार पर यह फैसला लिया गया है। इन पर %ओटीटी प्लेटफॉर्म% की आड़ में अश्लील वीडियो, बोल्ड वेब सीरीज और कामुक कंटेंट परोसने का आरोप था, जिससे युवाओं और बच्चों पर नकारात्मक असर पड़ रहा था।

इस कार्रवाई के पीछे सरकार की मंशा डिजिटल स्पेस को स्वच्छ, सुरक्षित और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप बनाए रखना है। साथ ही यह संदेश देना भी है कि इंटरनेट पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में अश्लीलता और गैरकानूनी गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

इस कार्रवाई से इंटरनेट पर अश्लीलता फैलाने वाले अन्य ऐप्स और वेबसाइट्स के लिए चेतावनी भी है कि अगर वे नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो उनके खिलाफ भी ऐसी ही कठोर कार्रवाई की जाएगी ■■■

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

संरक्षक सदस्यता : रु. 50,000/-

आजीवन सदस्यता : रु. 20,000/- (व्यक्तिगत), रु. 40,000/- (संस्थागत)
विशेष सदस्यता : रु. 5000/- (व्यक्तिगत), रु. 10,000/- (संस्थागत)
सामान्य सदस्यता (5 वर्ष) : रु. 2500/- (व्यक्तिगत) और रु. 5000/- (संस्थागत)

(डॉक खर्च सहित)

---

1. हां मैं 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में 'मीडिया मैप' के नाम नकद/चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं : .... दिनांक : .... के रूप में धनराशि रु. .... की सहयोग राशि संलग्न कर रहा/रही हूं।

2. मैंने दिनांक : .... को नकद/चेक/डी.डी. .... के माध्यम से 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/ संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में धनराशि रु. .... कार्यालय के पता- 69 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम, गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश) पर भेज दिया है।

3. मैंने 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में धनराशि रु. .... 'मीडिया मैप' के (भारतीय स्टेट बैंक, नीतिखंड इंदिरापुरम, गाजियाबाद के चालू खाता संख्या : **43812481024**, **IFSC** कोड नं.- **SBIN0005226**) में दिनांक.. को जमा करा दिए हैं। इसकी सूचना Email : editor@mediamap.co.in द्वारा भेज दी है।

मेरा पूरा विवरण निम्न प्रकार से है, कृपया मेरे पते पर 'मीडिया मैप' पत्रिका भेजने की कृपा करें।
पूरा नाम : .... डाक का पता : ....
पिन कोड : .... मोबाइल/फोन नं. : ....

हस्ताक्षर

मीडिया मैप

Media Map

पंजीकृत कार्यालय : 2324, सेक्टर-डी,पॉकेट-2, वसंतकुंज, नई दिल्ली
Email : editor@mediamap.co.in, Contact: 9810385757/9910069262

नाम : .... पता : .... से नकद/चेक/डी.डी द्वारा
राशि. रुपया : .... दिनांक : .... को पत्रिका की सदस्यता हेतु प्राप्त किया।

(प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर)

RNI NO. : UPHIN/2016/68336

See Media Map Website

Website link: www.mediamap.co.in

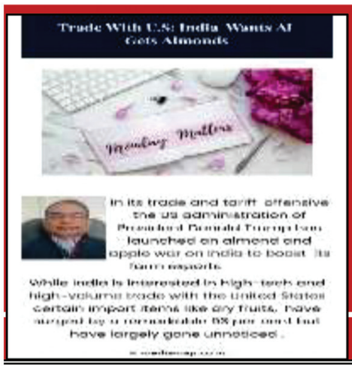

View Media Map YouTube

Media Map News

जनसंवाद 7 : खानपान पर रोक क्यों? Ep- 124

3 views • 4 hours ago

जन संवाद 6 : नेहा हो या कुणाल, व्यंग्य से क्यों डरना? Ep- 123

4 views • 4 hours ago

विविधा 15 : जज को भी छह महीनों की सजा : Ep- 122

27 views • 21 hours ago

विविधा- 14 : कंपनी की तानाशाही - आपके प्रोडक्ट को ख़राब कर रहें हैं। Ep- 121

6 views • 23 hours ago

आर्थिक सहयोग की अपील

उदार लोकतंत्र और गैर-सांप्रदायिक विश्वास के दर्शन से जुड़ा, मीडियामैप समाचार नेटवर्क एक गैर-व्यावसायिक संगठन है। हम आप जैसे गंभीर और समझदार पाठकों को संबोधित करना चाहते हैं। वरिष्ठ मीडियाकर्मियों के समूह द्वारा किया गया यह एक स्वैच्छिक प्रयास है, जिसका किसी राजनीतिक, सामाजिक या व्यावसायिक समूह से कोई संबंध नहीं है। मीडिया मैप के प्रकाशन को निरंतर व सुचारु रूप से जारी रखने हेतु आपका सहयोग आवश्यक है।

- ***State Bank of India***
- ***Account No. 43812481024***
- ***IFSC # SBIN0005226***
- ***प्रस्तुत QR कोड को स्कैन करें।***

SBI

SCAN & PAY

प्रकाशक

MBKM Foundation, एक पंजीकृत गैर-लाभकारी संगठन

पंजीकृत कार्यालय

फ्लैट नंबर: 2332, सेक्टर-डी, पॉकेट-2, वसंत कुंज, दक्षिण दिल्ली

Please Stay with us and Explore the Beauty of the Surrounding Areas

Scholars Destination

PLEASE CONTACT

9045005700 | 9910322682 | www.sdmotel.com | info@sdmotel.com